RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
विशेष संपादक
मुकेश कुमार सिंह
सहायक संपादक
कोमल सुल्तानिया
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
राजनीतिक ब्यूरो
अमरेंद्र शर्मा 9899360011
प्रभाकर कुमार राय
प्रबंधक
अविनाश कुमार 8287266244
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह 9546224277
क्राइम ब्यूरो
एसएन श्याम
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
समस्तीपुर : राजेश कुमार
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
मुंगेर : सिद्धांत
कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता 9973077043
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : नवल वत्स, 9818901841
स्वाति, रंजीत कुमार
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 8-9, अंक : 12, अगस्त-सितम्बर 2021, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

13 प्रधानमंत्री जी का 'हर घर जल' का सपना जल्द होगा पूरा...

चिराग पासवान के सामने... 05

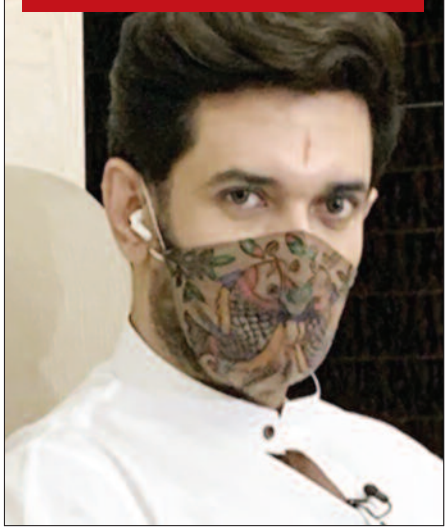

जब बिहार के मुख्यमंत्री को ... 07

सुशासन बाबू नीतीश के रंग! ... 09

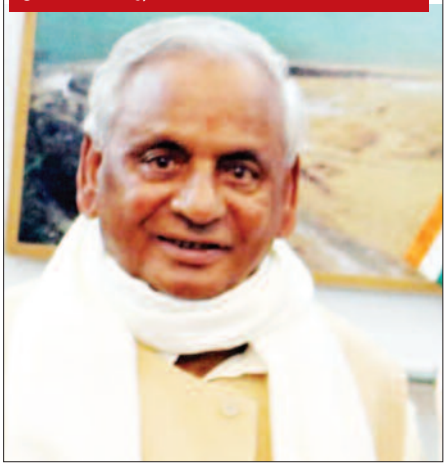

भाई-बहन का रिश्ता बनाता ... 23

धर्म व राजनीति के घातक घालमेल का विकृत चेहरा है तालिबान

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

धर्म और राजनीति बिल्कुल अलग मामले हैं। एक दूसरे के साथ मिलकर दोनों दूषित हो जाते हैं। बात अफगानिस्तान में तालिबान की हो रही है इसलिए यहां यह देखना भी जरूरी है कि दुनिया में इतने मुस्लिम मुल्क हैं पर इनसे क्या हुआ मुसलमानों की तरक्की के लिए? तालीम जो तरक्की का सबसे बड़ा आधार है उसके लिए इनके पास कौन सी ऐसी यूनिवर्सिटी है जिसमें पढ़ना तालिबान (स्टूडेंट्स) का ख्वाब हो। दुनिया की सारी नामी यूनिवर्सिटी इंग्लैंड, अमेरिका, यूरोप में ही हैं। अगर आज वहां भी चर्च हस्तक्षेप करता होता तो क्या ऐसी शानदार शिक्षा व्यवस्था बनी रहती? धर्म के नाम पर शासन मूलतः प्रगति विरोधी विचार है। धर्म एक पुरानी व्यवस्था है और दुनिया अब नए आए विचारों और मूल्यों के अनुरूप शासन चाहती है। इसे चर्च ने सबसे पहले समझा और फ्रेंच क्रांति के बाद वह वहां राजनीति और शासन व्यवस्था से अलग हो गया। च्रर्च और स्टेट (राज्य) के अलग होने के बाद ही यूरोप की समृद्धि और प्रगति का इतिहास लिखा जा सका। यह बताने की जरूरत नहीं है कि 1789 फ्रांसीसी क्रांति से पहले यूरोप के राज्यों में धार्मिक शासन की पकड़ कितनी मजबूत थी। उसके बाद के दो सौ साल ही मानव प्रगति के सबसे अहम साल रहे। सारी वैज्ञानिक, औद्योगिक तरक्की के साथ राजनीतिक विचार और जनपक्षधर मूल्यों की चेतना उसके बाद ही आई। लोकतंत्र जो आज दुनिया में शासन करने का सबसे आधुनिक और सही विचार है उसके बाद ही अमल में आया। अफगानिस्तान में आज जो हो रहा है उससे लगता है कि कुछ लोग समय की सुई को वापस पीछे घुमाना चाहते हैं। अफगानिस्तान जो भारत और कई देशों से पहले ही आजाद हो गया था वापस एक नई गुलामी में फंसता नजर आ रहा है। तालिबान की वापसी के साथ अफगानिस्तान में जबर्दस्त अफरा-तफरी मच गई है। ऐसे भयानक दृश्य देखने को मिल रहे हैं जो इससे पहले कभी देखना तो दूर सोचे भी नहीं गए। डर और घबराहट की वजह से लोग हवाई जहाज से लटक गए। उसकी छत पर चढ़ गए। रस्सी से चढ़कर अंदर गए! और अमेरिका जो अफगानिस्तान में सामान्य स्थिति लाने के लिए आया था उसकी एयरफोर्स का जहाज लटके हुए लोगों को लेकर उड़ान भर गया। नतीजा वही हुआ। जो होना था। थोड़ी सी उंचाई पर जाते ही लटके हुए लोग गिरे और मर गए। काबुल एयरपोर्ट पर लोगों की भीड़ और खड़े हुए हवाई जहाजों से लेकर रनवे पर स्टार्ट हो गए जहाज में लटकने की कोशिश यह बता रही है कि वहां कितना भय है। वीडियो में भी दिख रहा है और जाहिर है कि मुल्क छोड़कर भागने की कोशिश करने वाले ये सारे पुरुष हैं। महिलाएं और बच्चे इन स्थितियों में कोशिश भी नहीं कर सकते। ऐसी परिस्थितियों का सबसे बुरा प्रभाव उन पर ही पड़ता है। ये हालत यह बताने के लिए पर्याप्त है कि अमेरिका जो वहां सत्ता पलट को सत्ता हस्तांतरण बताने की कोशिश कर रहा है किस तरह दुनिया को एक बार फिर बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है। बंदूक की दम पर सत्ता हथियाते तालिबान को वैधता देने के लिए अमेरिका उसे सत्ता हस्तांतरण का नाम दे रहा है।

कोरोना से खतरनाक मोबाइल वायरस

कोविड-19 जैसी महामारी ने यह साबित कर दिया कि इंसान के लिए विषम परिस्थितियों में स्वयं को सुरक्षित रखना अत्यंत चुनौतिपूर्ण काम है। कोविड काल में एक इंसान जब घर में कैद हो कर रह गया था तो उसके लिए सबसे कठिन काम था अपने मानसिक स्तर को ठीक रखना। खुद को व्यस्त रखना साथ ही परिवार को एक संतुलित माहौल देना। बच्चों की पढ़ाई ऑन लाइन हो चुकी थी और हर कोई सिर्फ मोबाइल सेट में सिमट कर रह गया था। हालात यह बन गए कि लोगों को पता ही नहीं चला कि कब वह मोबाइल के इस जाल में ट्रैप हो कर रह गए। नतीजा यह हुआ कि लोगों में चिड़चिड़ापन, सिरदर्द, भूख ना लगना और बार-बार मोबाइल को हाथ में लेकर एक एप्लीकेशन से दूसरी एप्लीकेशन में बेमतलब झांकने का आदी बना दिया।

कोविड महामारी के प्रभाव के चलते दुनिया भर की अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर हो रहा है, जिसके कारण करोड़ों लोगों के रोजगार छिन गए या फिर रोजगार पर संकट गहरा गया। रोजगार पर संकट मतलब आर्थिक संकट से दो-चार होना। इस बात से लोगों में तनाव और मानसिक परेशानियां बढ़ने लगीं और लोगों के सामने परिवार के भरण-पोषण और बच्चों के भविष्य की चिंता खड़ी हो गई। विशेषज्ञ बताते हैं कि यह संकट यदि और गहराता है तो इसके परिणाम बहुत घातक हो सकते हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि कोविड महामारी के इस दौर में अपने मानसिक स्तर को बेहतर कैसे रखा जाए। तो इसके लिए आपको कुछ बातों का ध्यान रखना होगा।

मानसिक स्तर को बेहतर रखने के उपाय

1. हर हाल में सकारात्मक सोच रखने की कोशिश करें। बेशक परिस्थितियां अभी अनुकूल नहीं है लेकिन वक्त हमेशा एक सा नहीं रहता। कहते हैं रात कितनी भी लंबी क्यों ना हो, सवेरा तो होकर ही रहेगा, ठीक उसी तरह परिस्थितियां कितनी भी विषम क्यों ना हों एक ना एक दिन अनुकूल होंगी ही। बस आपको धैर्य से एक वाक्य याद रखना है, यह वक्त भी गुजर जाएगा। खुद को ऊजार्वान और उम्मीदों से भरा रखने के लिए इससे बेहतर वाक्य और कोई हो ही नहीं सकता। बस इसको दोहराते रहें।

2. कोविड-19 की खबरों को सिर्फ जानकारी तक ही सीमित रखें ना कि इसे अपने ऊपर हावी होने दें। अपनी दिनचर्या बनाएं। परिवार के कामों में हाथ बटाएं और अपने विचारों को लिखना शुरू करें। परिवार के साथ समय बिताएं और उन्हे और स्वयं को खुश रखने की कोशिश करें। हो सके तो अपने बचपन और पिछले गुदगुदाने वाले पलों को अपनों के साथ साझा करें।

3.अपनी दिनचर्या में कसरत को जरूर शामिल करें। कसरत आपको चुस्त-दुरूस्त बनाए रखने में सबसे ज्यादा भागीदारी निभाती है। कसरत करने से शरीर में एन्डॉर्फिन नाम का पदार्थ बनता है जो आपके मानसिक स्तर को बेहतर बनाए रखने में सहायता करता है।

4. सुबह उठकर दूध वाली चाय की बजाय आजकल अधिकतर लोग ग्रीन टी का इस्तेमाल कर रहे हैं। ग्रीन टी में एंटीऑक्सीडेंट अधिक होता है जो आपके मस्तिष्क के साथ ही आपके वजन को भी कंट्रोल करके रखता है।

गलत धारणाओं से बचें

मानसिक रोगों को लेकर लोगों में गलत धारणाएं भी हैं। कई लोग इसे अंधविश्वास या मन का वहम बताते हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही लोगों के लिए मुसीबत का कारण बन सकती है। ज्यादातर लोग मानसिक रोगों के बारे में नहीं जानते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर मानसिक रोग होता क्या है?

मानसिक रोग क्या होता है?

मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के भावनात्मक स्तर का वर्णन करता है या किसी मानसिक विकार की अनुपस्थिति को दशार्ता है। मानसिक स्वास्थ्य हमारी भावनाओं की अभिव्यक्ति है और मांग की विस्तृत श्रृंखला के लिए एक सफल अनुकूलन का प्रतीक है।

यह "सलामती की एक स्थिति है जिसमें किसी व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का एहसास रहता है, वह जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है, लाभकारी और उपयोगी रूप से काम कर सकता है और अपने समाज के प्रति योगदान करने में सक्षम होता है।

मानसिक रोग को मनोविकार या मानसिक स्वास्थ विकार इत्यादि के नामों से भी जाना जाता है। मानसिक रोग की स्थिति में व्यक्ति की मनोदशा, यादाशत, स्वभाव इत्यादि की प्रक्रिया पर असर पड़ता है और व्यक्ति का अपने भावो इत्यादि पर कोई काबू नहीं रहता है।

मानसिक रोग के कितने प्रकार के होते हैं?

मानसिक रोग के 7 प्रकार के होते हैं- मूड डिसऑर्डर, घबराहट डिसऑर्डर, पर्सनालिटी डिसऑर्डर, मानसिक विकार, खाने संबंधी विकार, ट्रामा संबंधी विकार, नशे की लत..

मानसिक रोग के 5मुख्य लक्षण होते हैं?

उदास महसूस करना, मूड का बार-बार बदलना, अधिक डर, घबराहट या चिंता होना, अकेला रहना, खाने और सोने की आदात में अचानक से बदलाव होना..

मानसिक रोग के संभावित लक्षण

लक्षण कई अलग-अलग तरीकों से प्रकट हो सकते हैं. इनमें बुरे सपने, परेशान करने वाली यादें या फ्लैशबैक शामिल हैं, हर समय तनावग्रस्त और चिड़चिड़ा रहना और सोने में भी परेशानी होना. आप हाइपर-सतर्क भी हो सकते हैं और ध्यान केंद्रित करने में भी परेशानी हो सकती है. यह लक्षण यदि लगातार रहते हैं, तो ढळरऊ के रूप में निदान किया जा सकता है. हालांकि, आइसोलेशन में अगर यह लक्षण आप महसूस कर रहे हैं तो आपको इसका निदान करने की आवश्यकता नहीं है.

मरीजों को अपने विचारों, भावनाओं और व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए. उन्हें इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि वे खुद को क्या बता रहे हैं और कैसे उन्हें महसूस कर रहे हैं और वे क्या करते हैं. अगर आपके विचार काले और सफेद या भयावह है तो आप सतर्क हो जाएं.

तो इस बार जब आपको कोई मानसिक तनाव या परेशानी हो तो परेशान होने की बजाय खुद के लिए बताए गए नियमों का पालन करें और तनाव से स्वयं को और अपनों को हमेशा के लिए दूर रखें।

चिराग पासवान के सामने विरासत बचाने की चुनौती

परिवार ने की बगावत,लेकिन समर्थक दिख रहे साथ अस्तित्व के लिए संघर्ष की सुझबुझ की दरकार

अखिलेश कुमार

आज से करीब 21 वर्षों पूर्व दलित नेता रामविलास पासवान ने लोक जनशक्ति पार्टी की स्थापना की थी और स्थापना काल से हीं रामविलास पासवान पर आरोप लगता रहा कि यह एक परिवार की पार्टी बनकर रह गया है। इस आरोप का आधार भी रहा है। क्योंकि स्थापना काल से हीं दल में परिवार का वर्चस्व कायम रहा। वह चाहे संगठन में महत्वपूर्ण पदाधिकारी बनने की बात हो या फिर लोकसभा या विधानसभा चुनाव में टिकट लेने की। इसके बावजूद लोक जनशक्ति पार्टी और रामविलास पासवान के साथ बिहार में एक बड़ा वोट बैंक हमेशा खड़ा नजर आया। खासकर उनके स्वजातीय लोगों तो उनके हर निर्णय के साथ आपनी एकजुटता दिखते रहे। अपने मौत से पहले हीं रामविलास पासवान ने पार्टी की बागडोर पुत्र चिराग पासवान को सौंप दी थी। पिछले लोकसभा चुनाव में लोजपा को सात सीटें राजग गठबंधन में मिली थी, जिसमें छः पर सफलता हासिल हुई थी। इसमें जीत करने वाले तीन रामविलास पासवान के परिवार के लोग हैं।पारस, चिराग और प्रिंस के अलावा बीणा सिंह, महबूब अली कैसर तथा चंदन सिंह शामिल थे। रामविलास पासवान के मौत के अभी चंद माह हीं बिते थे कि लोजपा में बड़ी टुट हो गया और इसका प्रमुख सूत्रधार बने रामविलास के भाई पशुपति पारस। वही पशुपति पारस जिन्हें किसी भी सदन के सदस्य नहीं रहने के बावजूद रामविलास पासवान ने नीतीश सरकार में मंत्री और विधान परिषद् का सदस्य बनवाया था। साथ ही अपनी पत्नी रीना पासवान के मांग को दरकिनार कर परम्परागत हाजीपुर सीट से उन्हें लोकसभा का उम्मीदवार बनाया। लेकिन पशुपति पारस ने पार्टी के अन्य चार सांसद को साथ लेकर 14 जून 2021को खुद को असली लोजपा बताया और लोकसभा में संसदीय दल के नेता भी बन गये। 7 जुलाई 2021 को केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार के मंत्रीमंडल विस्तार में भी उन्हें कैबिनेट मंत्री बना दिया गया। और इसी के साथ करीब 21 वर्षों पहले रामविलास पासवान द्वारा खड़ा किया गई पार्टी दो भागों में विभक्त हो गया। लोजपा में टुट के साथ ही राजनीतिक फिजां में यह बात उठने लगी की अब चिराग के भविष्य का क्या होगा? यह सवाल उठना लाजिमी है। क्योंकि रामविलास पासवान ने अपने मौत से पहले चिराग पासवान को हीं पार्टी की बागडोर संभालने के लिए दे दी थी। दरअसल बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पिछले विधानसभा चुनाव से हीं चिराग पासवान को अपने निशाने पर रखे थे। बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में जब राजग गठबंधन में लोजपा को सम्मानजनक सिट नहीं मिला तो इसके लिए चिराग ने नीतीश कुमार को जिम्मेदार ठहराते हुए 142उम्मीदवार मैदान में उतारने दी। इसमें अधिकांश जदयू उम्मीदवारों के खिलाफ उतारे गये तथा लोजपा उम्मीदवार के चलते जदयू को दो दर्जन से अधिक सीटों पर करारी हार का सामना करना पड़ा था। नीतीश कुमार चिराग के इस निर्णय से आज भी खासे नाराज हैं तथा लोजपा में टुट के लिए भी उन्हें दोषी बताया जा रहा है। चाचा पारस सहित पार्टी के पांच सांसदो को एक साथ निकल जाने बाद अकेले पड़े चिराग को अब कई चुनौतियों का सामना करना है। पार्टी के वोट बैंक को अपने पक्ष में कायम रखने के साथ ही राजनीति की अगली रणनीति तथा गठबंधन को लेकर निर्णय करना काफी महत्व रखता है। चिराग पासवान को भाजपा से काफी उम्मीदें रही है, यही कारण है कि पिछले विधानसभा चुनाव में राजग गठबंधन के खिलाफ उम्मीदवार देने के बावजूद वो हमेशा अपने आप को नरेन्द्र मोदी का हनुमान बताते रहे। उन्होंने बगावत करने वाले चाचा पारस को नरेन्द्र मोदी मंत्रीमंडल में शामिल किये जाने के बावजूद अभी तक भाजपा एंव नरेन्द्र मोदी की खुली आलोचना नहीं की है। जबकि नीतीश कुमार और उनके सरकार में बढ़े भ्रष्टाचार की बात हर मंच से कर रहे हैं। दरअसल अभी भी चिराग पासवान को लगता है कि भाजपा और नरेन्द्र मोदी के दिल में हमारे लिए जगह है। नरेन्द्र मोदी चिराग के कार्यशैली के प्रशंसक रहे हैं। भाजपा जब पिछले लोकसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत में आई थी और 2 जुलाई 2019 को भाजपा सांसदों की बैठक हो रही थी तो उसमें नरेन्द्र मोदी ने चिराग पासवान का जमकर प्रशंसा की थी। उन्होंने भाजपा सांसदों से कहा था कि बेहतर सांसद बनने की गुर चिराग से सीखें।संसद प्रक्रिया में कैसे भाग लिया जाता है और किसी बील पर तैयारी कर कैसे बोलना चाहिए, यह भी चिराग से सीखें। उन्होंने कहा था कि चिराग सभी महत्वपूर्ण चर्चा में मौजूद रहते हैं। हालाकि लोजपा में टुट के बाद अभी तक चिराग के लिए भाजपा का रूख निराशाजनक रहा है।

लोजपा में टुट के बाद चिराग पासवान ने कार्यकताओं तथा समर्थकों के बीच अपनी पकड़ मजबूत बनाने के कवायदें आरंभ कर दी है। इसी के तहत रामविलास पासवान के जन्मदिन पर उन्होंने उसी हाजीपुर से आशीर्वाद यात्रा आरंभ की जहाँ से बगावत करने वाले चाचा पारस सांसद हैं तथा रामविलास पासवान लम्बे समय तक सांसद रहे थे। चिराग पासवान के आशीर्वाद यात्रा में लोगों की जुट रही भीड़ जातिगत के साथ युवा पीढ़ी का भी है, तथा यह उनके लिए भविष्य की राजनीति हेतु शुभ संकेत है। बिहार में अभी लोकसभा तथा विधानसभा चुनाव में काफी समय है, ऐसे में लम्बी संघर्ष के साथ ही साथ अपने समर्थकों को एकजुट रखना चिराग के बड़ी चुनौती है। हालांकि इस बात से चिराग पुरी तरह वाकिफ हैं, यही कारण है कि आशीर्वाद यात्रा में समर्थन मिलने से उत्साहित होकर वो पुरे बिहार में पदयात्रा कर घर घर अपनी पकड़ बनाने की योजना भी बना रहे हैं। भविष्य की राजनीति को लेकर गठबंधन का निर्णय भी उन्हें काफी सोच विचार कर लेना होगा।

लालू के बड़े लाल ने जगदानंद सिंह को फिर किया जलिल

तेज प्रताप के बोल पर राजद नेताओं ने साधी चुप्पी

अखिलेश कुमार

लालू यादव ने हर मुसीबत में साथ देने वाले जगदानंद सिंह को राष्ट्रीय जनता दल के बिहार ईकाई का कमान इस लिए सौंपा था कि जगदानंद सिंह सिद्धांत और अनुशासन के पक्के आदमी हैं, तथा वे पार्टी तथा लालु परिवार के प्रति पिछले तीन दशक से वफादारी करते आ रहे हैं। जब जगदा बाबू बक्सर से सांसद थे तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ एक कार्यक्रम में शामिल हुए थे। उस दौरान यह चर्चा होनेलगी कि जगदानंद सिंह पाला बदलने वाले है। और इस सम्बन्ध में जब पत्रकारों ने लालू यादव से सवाल किया था तो लालू यादव का जवाब था कि जगदानंद सिंह पर मुझे वैसा ही विश्वास है जैसा भागवान पर। जगदानंद सिंह कभी हमें और हमारे दल को नहीं छोड़ सकते हैं।

राजद का कमान संभालने के बाद जगदानंद सिंह ने दल को मजबूत करने के साथ कार्यकताओं को अनुशासित रहने का पाठ भी हमेशा पढाते रहे हैं। दल के कार्यालय में अव्यवस्था को दूर करने के लिए भी कई कदम उठाए और इसका सकारात्मक परिणाम भी दल के नेताओं को देखने को मिलने लगा। लेकिन इसी बीच लालू के बड़े लाल पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव ने उन्हें निशाना बनना शुरू किया। पहले परोक्ष रूप से और फिर प्रत्यक्ष रूप से अपने पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष को सार्वजनिक मंचों से तेज प्रताप खरी खोटी सुनाने लगे।

राजद के 25वीं स्थापना दिवस पर भी सार्वजनिक मंच से जब तेज प्रताप यादव जगदानंद सिंह पर टिप्पणी की तो सभामें उपस्थित नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव भी वहां मौजूद थे, लेकिन इस मामले पर उन्होंने चुप्पी साध ली। यही नहीं, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़े लालू यादव ने तो तेज प्रताप यादव के भाषण की प्रशंसा भी की।

स्थापना दिवस में लालू यादव के पुत्र द्वारा जलिल होने के बाद जगदानंद सिंह के इस्तीफे की बात सामने आयी, जिसे लालू यादव ने किसी तरह उन्हें मनाया और पद पर बने रहने को कहा। हालांकि जगदानंद सिंह ने इस्तीफे की बात को भ्रामक बताया था।

पार्टी स्थापना दिवस के ठीक एक बाद छात्र राजद की बैठक में तेज प्रताप यादव ने पुनः जगदानंद सिंह को सार्वजनिक मंच से जलिल किया और उन्हें हिटलर बताते हुए यहाँ तक कह डाला कि कुर्सी किसी की बपौती नहीं है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष के विरुद्ध इतना गंभीर और अपमानजनक टिप्पणी के बावजूद अभी तक लालू यादव, तेजस्वी यादव या अन्य किसी भी दल के नेता ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। प्रतिदिन सुबह से शाम तक कार्यालय में बैठने वाले जगदानंद सिंह दो दिनों से कार्यालय में कदम नहीं रखे हैं। तेज प्रताप यादव पर अनुशासनिक कार्रवाई के नाम पर राजद नेताओं को सांप सूंघ गया है। कारवाई की बात तो दूर, इस सम्बन्ध में अभी तक किसी भी राजद के नेता ने मुंह तक नहीं खोला, वहीं इस वयान के बाद विपक्ष का राजद पर लगातार हमला जारी है।

एलिट संस्थान में ऑफलाइन-क्लासेस फिर से आरंभ हो चुके हैं

इंजीनियरिंग और मेडिकल प्रवेश-परीक्षाओं में अपने रिजल्ट को लेकर चर्चित बिहार के प्रसिद्ध कोचिंग-संस्थान एलिट इंस्टिच्युट ने जे.ई.ई., नीट (मेडिकल) और एन.डी.ए. के लिये नामांकन की घोषणा की। गौरतलब है कि लॉकडॉन के दौरान एलिट के द्वारा मिलने वाली सुविधाओं का भरपूर उपयोग किया और संस्थान के बच्चों ने विगत-परीक्षाओं में अपने रिजल्ट से धूम मचाई है। संवाददाताओं से बातचीत के क्रम में संस्थान के निदेशक ने बताया कि छात्र-छात्राओं के लिये विशेष छात्रवृत्ति की योजना शुरू की गई है, जिसमें मेधावी छात्रों को ज्ञानोदय-योजना के अंतर्गत लाभ दिया जायेगा। उन्होंने बताया कि एलिट के द्वारा स्कॉलरशिप देने का आधार बोर्ड-परीक्षाओं के रिजल्ट, स्कॉलरशिप-टेस्ट के साथ-साथ भारतीय-सेना के परिवारों के लिये भी रखा गया है। एलिट संस्थान में ऑफलाइन-क्लासेस फिर से आरंभ हो चुके हैं, साथ ही एलिट के टेस्ट-सीरीज का लाभ भी बच्चे उठा रहे हैं।

जब बिहार के मुख्यमंत्री को दोपहर का भोजन भी नहीं होता था नसीब...

अनूप नारायण सिंह

नीतीश कुमार पिछले 15 साल से बिहार के मुख्यमंत्री बने हुए हैं। आज वे देश के चर्चित राजनेताओं में एक हैं। लेकिन एक वक्त ऐसा भी था जब उनके पास दोपहर के भोजन के लिए पैसा नहीं होता था। वे सुबह ही अपने घर बख्तियारपुर से ट्रेन में सवार हो कर पटना आते थे। दिनभर युवा लोकदल के अधिकारियों से मिलते, राजनीति विचार-विमर्श करते और देर शाम को घर लौट जाते। वे घर से खाना का कर पटना आते थे और फिर घर पहुंच कर ही उनको भोजन नसीब होता था।

उस समय नीतीश जी राजनीति में स्थान पाने के लिए जद्दोजहद कर रहे थे। पैसे की बहुत तंगी थी। दिल्ली आने-जाने और छोटे-मोटे खर्चे के लिए नीतीश कुमार को तब उनके बहनोई देवेन्द्र सिंह और मित्र नरेन्द्र कुमार सिंह (इंजीनियर) मदद किया करते थे। नीतीश कुमार के बहनोई देवेन्द्र सिंह रेलवे में काम करते थे और पटना में रहते थे। 1977 और 1980 में बिहार विधानसभा का चुनाव हार जाने के बाद नीतीश के भविष्य पर बड़ा सवाल खड़ा हो गया था। नीतीश कुमार के दोस्त अरुण सिन्हा ने अपनी किताब में उनके संघर्ष का विस्तार से जिक्र किया है। 1978 में नीतीश कुमार के पिता राम लखन सिंह का निधन हो गया था। उनके पिता बख्तियारपुर के नामी वैद्य थे। आयुर्वेदिक डॉक्टर के रूप में उनकी प्रैक्टिस अच्छी थी। लेकिन उनके गुजरने के बाद घर में नियमित आमदनी का स्रोत बंद हो गया। खेती से थोड़ी-बहुत आमदनी होती थी लेकिन इससे परिवार चलाना मुश्किल था। 1980 में नीतीश कुमार के पुत्र का जन्म हो चुका था। उन पर घर चलाने की भी जिम्मेवारी भी आ चुकी थी। उनकी पत्नी मंजू सिन्हा तब एक सरकारी स्कूल में शिक्षक की नौकरी पा चुकी थीं। नीतीश कुमार के ससुराल के लोग नीतीश को राजनीति से अलग होने और कोई नौकरी करने की सलाह देते थे। नीतीश जी इंजीनियर होते हुए भी सरकारी नौकरी नहीं करना चाहते थे। इस लिए उनको ये सलाह कभी- कभी अप्रिय भी लगती। नीतीश जी के ससुर ने पटना के कंकड़बाग इलाके में मकान बना रखा था। मंजू सिन्हा अपने माता-पिता और भाइयों के साथ पटना में रहती थीं। वे गुलजारबाग के स्कूल में शिक्षक थीं। पैसों की तंगी और अपने चुनाव क्षेत्र से जुड़े रहने के कारण नीतीश कुमार जी बख्तियारपुर में रहते थे। वे रोज ट्रेन से पटना आते। रेल के साधारण डिब्बे में बहुत भीड़ होती थी। कभी- कभी नीतीश को एक घंटे का सफर खड़े- खड़े ही पूरा करना पड़ता था। पटना पहुंच कर वे युवा लोक दल के दफ्तर में जाते। कभी कभी लोकदल दल के विधायकों से मिलते। उनके जेब इतने पैसे नहीं होते कि वे पटना में दोपहर का भोजन कर लेते। जब वे सुबह निकलते तो अखबार खरीदने के बाद उनकी जेब में कहीं आने जाने भर ही पैसे होते थे। नीतीश कुमार जी "जेपी आंदोलन" के समय चर्चित छात्र नेता थे। इंजीनियर होने की वजह से बड़े- बड़े समाजवादी नेता उनकी क्षमता के कायल थे। लेकिन चुनावी हार ने नीतीश को दोराहे पर खड़ा कर दिया था। नीतीश पटना में कभी कभी कपूर्री ठाकुर से भी मिलते थे। कपूर्री ठाकुर उस समय विपक्ष के नेता थे। एक दिन कपूर्री ठाकुर ने नीतीश से कहा कि अगर वे चाहें तो उनको इंजीनियर की नौकरी दिलाने में मदद कर सकते हैं। लेकिन नीतीश ने इंकार कर दिया। संसदीय राजनीति ही उनका अंतिम लक्ष्य था। 1984 में जब लोकसभा का चुनाव आया तो नीतीश ने लोकदल की तरफ से चुनाव लड़ने का आमंत्रण अस्वीकर कर दिया। वे एक और चुनाव नहीं हारना चाहते थे। नीतीश ने मन ही मन 1985 के विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी थी। लेकिन लालू यादव चुनाव लड़ने के लोभ से नहीं बच सके। 1984 में लालू ने लोकदल के टिकट पर छपरा से चुनाव लड़ा लेकिन बुरी तरह हार गये। लालू यादव तीसरे स्थान पर लुढ़क गये जब कि 1977 में उनकी शानदार जीत हुई थी। यहां रामबहादुर राय को जीत मिली थी। कांग्रेस के भीष्म प्रसाद यादव दूसरे स्थान पर रहे थे। 1985 में करीब चार महीने पहले ही विधानसभा चुनाव का एलान कर दिया गया था। नीतीश कुमार जी को लोकदल ने हरनौत से टिकट दिया। पार्टी की तरफ से प्रचार के लिए एक जीप और एक लाख रुपये दिये गये थे। उस समय अन्य उम्मीदवार जहां 8-10 लाख रुपये खर्च कर रहे थे वहां एक लाख रुपये की कोई अहमियत नहीं थी। इस गाढ़े वक्त में मंजू सिन्हा ने अपनी नौकरी से बचाये पैसे नीतीश कुमार को दिये थे। नीतीश कुमार जी ने मंजू सिन्हा से वादा किया था कि ये उनका आखिरी चुनाव है। नीतीश की मेहनत ने रंग दिखाया। वे भारी बहमत से यह चुनाव जीतने में कामयाब हुए। इसके बाद नीतीश कुमार ने फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। वे लगातार नयी मंजिलें तय करते गये।

सुशासन बाबू नीतीश के रंग!

कहते हैं, राजनीति में कोई किसी का ना तो मालिक होता है और ना ही कमिया अर्थात नौकर। राजनीति अपने लाभ हानि के मसले पर शीर्षस्थ राजनेता और राजनीतिक पार्टियां करती हैं.

यही कारण है कि लोकतंत्र में हमारे देश में अनेक राजनीतिक पार्टियां हैं और उनके नेता रंग रंग की राजनीतिक उछल कूद से जहां अनायास देश का भला करते हैं, वहीं देशवासियों का मनोरंजन भी।

बात अगर हम आज बिहार की करें, तो आज बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ह्सुशासन बाबूह्व के रूप में अपनी ही पीठ थपथपाते जाते हैं। यह सारा देश जानता है कि बिहार में सुशासन नाम की चीज आपको कहीं नहीं मिलेगी। अब उन्होंने एक नया अंदाज बयां दिखाया है जिसे राजनीति के बड़े पर्दे पर बड़े ही उत्सुकता के साथ देखा जा रहा है । यह है अपने ही एनडीए गठबंधन के खिलाफ सुर बुलंद करना।

नीतीश कुमार ने इस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी की दुखती हुई रग को पकड़ लिया है और कहा है कि पेगासस मुद्दे पर तो जांच होनी ही चाहिए।

राजनीति के जानकार हर आम-ओ-खास जानता है कि पेगासस जासूसी कांड पर नरेंद्र दामोदरदास मोदी और उनके दाएं बाएं रहस्यमय रूप से खामोश हैं। कोई कुछ कहता और न ही जांच की बात पर सहमति है। ऐसे में अपने ही गठबंधन के एक शीर्षस्थ नेता नीतीश कुमार द्वारा पेगासस जासूसी कांड के चीथड़े को खींचकर पूरी चलती संसद के बीच उधाड़ देना, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके दाएं बाएं को नागवार गुजर सकता है।

सबसे अहम सवाल यह है कि जिस एनडीए गठबंधन के संरक्षण में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बनकर कुर्सी पर बैठे हुए हैं यहां उन्हें ऐसी कोई बात करनी चाहिए जो गठबंधन के नीति और सिद्धांतों के खिलाफ है? क्या एनडीए गठबंधन का कोई माई बाप नहीं है जो उसे अपने हिसाब से देश के हित में और पार्टियों के हित में संचालित कर सके?

आखिरकार नीतीश कुमार के इन रंग बदलते बोलो के पीछे की राजनीति क्या है?

नीतीश कुमार की निगाह!

आपको हम बताते चलें कि नीतीश कुमार देश के एक बड़े कद के नेता माने जाते रहे हैं। और उन्हें प्रधानमंत्री पद का एक महत्वपूर्ण दावेदार भी लंबे समय से माना गया है। ऐसे में नीतीश कुमार ने सोची समझी राजनीतिक चाल चलनी शुरू कर दी है। पहले भी चल रहे किसान आंदोलन का आप समर्थन कर चुके हैं। यही नहीं राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) का मुख्य घटक दल जनता दल (यूनाइटेड) केंद्र सरकार की राय के विपरीत जाति जनगणना कराने पर भी जोर दे रहा है। नीतीश कुमार ने पेगासस जासूसी कांड की भी जांच की मांग कर दी है है ऐसे में सवाल है कि आखिर नीतीश कुमार केंद्र सरकार की नीतियों का इस तरह विरोध क्यों कर रहे हैं।

नीतीश कुमार, जैसा कि सभी जानते हैं एक के वरिष्ठ राजनेता हैं वह वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले प्रधानमंत्री पद के दावेदार रहे हैं। और मोदी को कई दफा घात प्रतिघात दे चुके हैं।

यही कारण है कि जब प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने देश की बागडोर संभाली तो उन्होंने नीतीश कुमार को दबाने का प्रयास शुरू कर दिया और लालू नीतीश कुमार के गठबंधन को अपने अदृश्य हाथों से छिन्न-भिन्न करके भाजपा के साथ नीतीश कुमार को लाने में सफलता प्राप्त की। जब नीतीश कुमार ने लालू के साथ को छोड़ा तो उनकी बड़ी आलोचना हुई थी। मगर नीतीश कुमार मौन हो आंखें बंद कर मुख्यमंत्री पद की कुर्सी पर विराजमान हो गए और एनडीए के साथ गलबहियों में खोये रहे। इधर नरेंद्र दामोदरदास मोदी उन्हें झटके पे झटका देते रहे 2019 में जब केंद्र सरकार में उन्होंने नीतीश कुमार के चार मंत्रियों के कोटे को कटौती करके एक मंत्री पद देने की बात कही तो नीतीश कुमार ने गुस्से में एक भी मंत्री पद लेने से इनकार कर दिया था। मगर उनकी नाराजगी पर कोई संज्ञान नहीं लिया गया।

नीतीश कुमार एक बेचारे मुख्यमंत्री बन करके रह गए। मगर जैसा कि होता है राजनीति में घाट घाट का पानी तो पीना ही पड़ता है ऐसे में नीतीश कुमार ने जैसे ही तीन विधेयकों का मामला जोर पकड़ने लगा वे किसानों के पक्ष में खड़े होकर के उन्होंने यह बता दिया कि वे मोदी की नीति के कितने खिलाफ हैं और अब पेगासस जासूसी मामले में उन्होंने नरेंद्र दामोदरदास मोदी को जिस तरह से घेर दिया है वह विपक्ष को एक ताकत दे गया है।

कल्याण सिंह पहले ऐसे राज्यपाल थे जो अपना खाना खुद ही बनाते थे

पूर्व राज्यपाल कल्याण सिंह ने अंतिम सांस ली। उन्हें वीआइपी कल्चर के खिलाफ किए गए फैसलों के कारण याद किया जाएगा। सिंह ने अपने कार्यकाल के दौरान राज्यपाल के आगे लगने वाला महामहिम शब्द हटवाकर इसकी जगह माननीय शब्द करवा दिया था।राज्यपाल को जयपुर से बाहर जाने पर दिया जाने वाला गार्ड ऑफ ऑनर भी उन्होंने बंद करवा दिया। विश्वविद्यालयों में 26 साल बाद दीक्षांत समारोह हर वर्ष करवाने की शुरूआत भी उन्होंने की। इसके लिए उनकी शर्त थी कि सबकी डिग्रियां आवश्यक रूप से तैयार हो जाएं।

दीक्षांत समारोह में जाने पर विवि द्वारा गोद लिए गांव को देखने अवश्य जाते थे। साथ ही दीक्षांत समारोह में गाउन पहनना बंद करवाकर उसकी जगह परम्परागत भारतीय पोशाक पहनना शुरू करवाया। परीक्षा से लेकर उत्तर पुस्तिकाओं के पूनर्मूल्यांकन के काम समयबद्ध करवाने की पहल करवाई थी। नकल पर उनकी सख्ती रहती थी।

कोई मामला ध्यान में आता तो उसको वो बिना कार्रवाई नहीं छोड़ते। कल्याण सिंह ने 4 सितम्बर, 2014 को राज्यपाल के पद की शपथ ली थी और वे 8 सितम्बर, 2019 तक राज्यपाल रहे। उन्होंने 2015 में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला।

16 साल बाद मिले थे कार्यकाल पूरा करने वाले राज्यपाल

कल्याण सिंह राजस्थान के उन चुनिंदा राज्यपालों में शामिल हैं, जिन्होंने अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा किया था। राजस्थान के राज्यपाल के रूप में अपना पूरा कार्यकाल निकालने वाले कल्याण सिंह सातवें राज्यपाल रहे हैं। उनसे पहले छह ही राज्यपाल ऐसे थे, जिन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया। कल्याण सिंह के कार्यकाल की शुरूआत होने से पहले बलिराम भगत ऐसे राज्यपाल थे, जिन्होंने अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा किया। बलिराम भगत 1993 से लेकर 1998 तक राज्यपाल रहे थे।

खुद ही बनाते थे अपना खाना

वे पहले ऐसे राज्यपाल थे, जो अपना खाना खुद ही बनाते थे और पद पर रहते हुए भी उनकी थाली में केवल चटनी, रोटी के साथ छाछ का एक गिलास होता था। यह उनकी सादगी का एहसास कराता था। उनसे कोई खास मिलने जाता तो वह अपने स्टाफ को बोलते, मेरी वाली चाय लेकर आना। इसका मतलब होता था केवल दूध वाली चाय। वे राजभवन पहुंचने वाले हर व्यक्ति से मिलते थे और जो भी मिलने पहुंचता उससे पूछते चाय—पानी ली या नहीं। चाय—पानी के साथ मिठाई सर्व करने के भी राजभवन कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश थे।

दो बार भाजपा छोड़ी फिर जुड़े

रामभक्ति के प्रति वशीभूत होकर अपना सर्वस्व निछावर कर देने वाले यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने अपने संघर्ष के बल पर यूपी में पहली बार भाजपा की सरकार बनाई और राम के नाम पर साल भर के भीतर सरकार भी चली गई। पखवाड़े भर पहले उनसे मिलने गए कुछ मीडियाकर्मियों से उन्होंने दोहराया था...अफसोस न गम जयश्रीराम।

राममंदिर आंदोलन में आगे रहे कल्याण सिंह की पहचान कट्टरपंथी हिंदुत्ववादी और प्रखर वक्ता की थी।30 अक्टूबर 1990 को जब मुलायम सिंह यादव यूपी के मुख्यमंत्री थे और कारसेवकों पर गोलियां चलीं तब बीजेपी ने उग्र हिंदुत्व को उफान देने के लिए कल्याण सिंह को ही आगे किया गया। अपने संघर्ष के बल पर उन्होंने 1991 में भाजपा की सरकार बनायी।

मंत्रिमंडल गठन के बाद उन्होंने रामलला परिसर का पूरे मंत्रिमंडल के साथ दौरा किया और राममंदिर बनाने का संकल्प लिया। उनकी सरकार के एक साल भी नहीं गुजरे थे कि 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में विवादित ढांचा ढहा दिया गया। इसके लिए उनको नैतिक जिम्मेदारी लेकर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया और केंद्र सरकार ने उनकी सरकार बर्खास्त कर दी।

1967 में अतरौली विधानसभा से पहली बार विधायक बनने के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस सीट से वे आठ बार जीते। दिसंबर 1999 मे कल्याण सिंह ने कुछ मतभेदों की वजह से भाजपा छोड़ दी। साल 2004 में एक बार फिर से भाजपा के साथ राजनीति से जुड़ गए।

2004 में उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार के रूप में बुलंदशहर से विधायक के लिए चुनाव लड़ा। 2009 में एक बार उन्होंने भाजपा छोड़ दिया और खुद एटा लोकसभा चुनाव के लिए निर्दलीय खड़े हुए और जीते भी। कल्याण सिंह का 23 अगस्त को अंतिम संस्कार किया जाएगा। उनका 5 जनवरी 1932 को अलीगढ़ में जन्म हुआ था।

बिहार में बालू को लेकर बवाल

अबतक 41 अधिकारी जांच घेरे में आगे 65 पर कार्रवाई की तैयारी आधा दर्जन से सफेदपोश भी निशाने पर

बिहार में अवैध बालू कारोबार में संलिप्तता के संकेत मिलने के बाद राज्य ने जुलाई माह के दुसरे सप्ताह में बड़ी कारवाई करते हुए दो जिले के आरक्षी अधीक्षक सहित 41 अधिकारियों पर कार्रवाई के लिए उन्हें फील्ड से हटाकर मुख्यालय में योगदान देने का आदेश जारी किया। इसमें भोजपुर के आरक्षी अधीक्षक राकेश कुमार दुबे, औरंगाबाद के आरक्षी अधीक्षक सुधीर कुमार पोरिका, डेहरी के अनुमंलाधिकारी सुनिल कुमार सिंह, पाली के एसडीपीओ तनवीर हसन, डेहरी के संजय कुमार, आरा के पंकज राऊत, औरंगाबाद के अनुप कुमार के अलावा कोईलवर, बिक्रम, बिहटा, फुलवारीसरीफ के अंचलाधिकारी सहित पटना, रोहतास, भोजपुर, औरंगाबाद तथा सारण जिले के पुलिस व प्रशासनिक विभाग के 41 अधिकारियों का नाम शामिल है।

आर्थिक अपराध अनुसंधान विभाग ने बालू के अवैध कारोबार में पुलिस प्रशासनिक अधिकारियों के संलिप्तता की शिकायत पर आंतरिक, तकनीकी एवं अन्य तरीके से जांच के दौरान इन अधिकारियों की संलिप्तता सामने आने लगी और इसी के आधार पर सभी को पहले फील्ड से हटाकर मुख्यालय में योगदान देने का आदेश जारी किया। फील्ड से हटाये गये अधिकारियों के बारे में आय से अधिक संपत्ति का मामला सामने आने लगा है और सरकार अब उनसे स्पष्टीकरण मांगने, प्राथमिकी दर्ज करने तथा उसके बाद सेवा से बर्खास्त करने तक की तैयारी में जुट गई है। आर्थिक अपराध अनुसंधान विभाग ने इस सम्बन्ध में 13 अगस्त को डेहरी के अनुमंलाधिकारी रहे सुनील कुमार सिंह के उत्तर प्रदेश स्थित पैतृक गांव, पटना आवास के अलावा सीडीपीओ पत्नी के ठिकाने पर एक साथ छापामारी की, जिसमें कई महत्वपूर्ण दस्तावेज व आय से अधिक संपत्ति रखने का प्रमाण मिलने की बात बताई जा रही है।

आर्थिक अपराध अनुसंधान विभाग के शीर्ष सूत्रो के अनुसार अवैध बालू कारोबार में संलिप्त अधिकारियों के साथ सफेदपोशों पर भी पैनी नजर है और पांच दर्जन से अधिक लोगों पर जल्द ही गाज गिर सकती है। इसमें आधा दर्जन से अधिक सफेदपोश भी निशाने पर है। सूत्रों की मानें तो इस कारोबार में संलिप्त कई बड़े लोग नाम उजागर होने से पहले ही अंडरग्राउण्ड हो गये हैं तो कईयों ने अपनी मोबाइल नम्बर बदल दी है। लेकिन वे रडार पर है तथा कभी भी उन पर शिकंजा कसा जा सकता है।

सोन नदी के पटना, भोजपुर, रोहतास, अरवल, औरंगाबाद और सारण में बालू का अवैध कारोबार तो चरम पर है हीं, साथ हीं बिहार के अन्य जिलों में भी अधिकारियों, माफिया तथा सफेदपोशों के मिलीभगत से यह अवैध कारोबार फल-फूल रहा है। इसी को लेकर बांका जिला प्रशासन ने भी अवैध बालू कारोबारियों के खिलाफ कमर कस ली है। इसी के तहत बांका के आरक्षी अधीक्षक अरबिन्द कुमार गुप्ता ने 54 लोगों के खिलाफ डोसियर खोलने की अनुशंसा जिलाधिकारी से की और जिलाधिकारी सुहर्त भगत ने डोसियर किया। इसमें राजनेता और पंचायत प्रतिनिधियों के भी नाम शामिल है। दरअसल बिहार विभाजन के बाद जब झारखंड अलग राज्य बना तो बिहार सरकार ने अन्य श्रोतों के साथ राजस्व में इजाफा के लिए बालू खनन को केंद्र में रखकर बालू नीति में परिवर्तन किया तथा नई बालू नीति के बाद राज्य मे इसके कीमतों में बेतहाशा वृद्धि होने लगा और इसी के साथ इसके अवैध कारोबार दिन प्रतिदिन बढ़ते गया। स्थिति यह बनी कि इसमें माफिया के साथ सत्ता पक्ष व विपक्ष के बड़े नेता, अधिकारी आदि ने शिरकत करना आरंभ किया।

किसने सोचा था कोरोना की दूसरी लहर कोहराम बनकर बरपेगा

...और ना जाने कितनों का घर उजारेगा ?

जीवन का ये दौर इस कदर खत्म हो जाना कुछ अजीब सी है.. देखते ही देखते अपनों से सदा के लिए बिछड़ जाना, कितना दर्दनाक होता है.. ये एहसास जज्बात सिर्फ तब तक होते है जब तक आपके दिलों में उनकी यादें होती है.. क्षण भर में अपनों का सर से साया हट जाना, कितना दर्दनाक है.. यूं अपनों का अपनो से बिछड़ जाना तन्हाई भरी जीवन है.. जिन्दगी का वीरान होना कितना कुछ खुद में बयान करती है..

भारत में कोरोना वायरस महामारी को एक साल से अधिक समय हो चुका है और देखते ही देखते कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने ऐसी रफ़्तार पकड़ी कि लोगों का दिल दहलना लगा..

कोरोना वायरस के मामले उस दौरान बढ़ने लगे जब देशभर में टीकाकरण अभियान शुरू हो गया. जनवरी से शुरू हुए इस अभियान को लगभग सात महीने बीत गए लेकिन वैक्सीनेशन और हर्ड इम्यूनिटी का कोई प्रभाव नहीं दिखने को मिला..

कोरोना वायरस के जो नए वैरिएंट मिले हैं वो ज्यादा संक्रामक हैं. यूके के नए स्ट्रेन में भी यही पाया गया. ऐसे में वायरस और लोगों के व्यवहार में एकसाथ हुए बदलाव ने दूसरी लहर को जन्म दे दिया है.ह्व लगभग सारे देशों में पहली लहर के मुकाबले दूसरी लहर ज्यादा खतरनाक रही. ये एक प्राकृतिक प्रक्रिया है लेकिन जब लोग असावधान हो जाते हैं तो वायरस के लिए स्थितियां और अनुकूल हो जाती हैं. वर्तमान में भी ऐसा ही हो रहा है. हालांकि, उसकी बीमारी करने की क्षमता तुलनात्मक रूप से कम होती है.

जैसे ही कोरोना वायरस का पहला लहर कम होने लगा तब से लोग लापरवाह होने लगे.. लोगों ने मास्क लगाना, बार-बार हाथ धोना और सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखना कम कर दिया साथ ही कई लोगों को लगने लगा कि वैक्सीन की एक डोज लेने के बाद ही वो इम्यून हो गए हैं. उन्हें कोरोना नहीं होगा.. हालांकि लोगों का यही आकलन उनके जीवन पर बेहद भारी पड़ा..

कोरोना के बढ़ते मामलों के साथ ही हर्ड इम्यूनिटी को लेकर भी चर्चा शुरू हुई थी. माना जा रहा था कि हर्ड इम्यूनिटी आने पर कोविड-19 का खात्मा हो सकता है लेकिन, फिलहाल ऐसा नहीं हुआ है.

एक नए वायरस जिनके लिए शरीर में बिल्कुल भी एंटीबॉडी नहीं है जिसकी वजह से स्वतः संक्रमण होने से हर्ड इम्यूनिटी नहीं आ सकती है. नई बीमारियों से लड़ने के लिए वैक्सीनेशन की भी जरूरत पड़ती है ताकि लोगों में इम्यूनिटी बन सके.

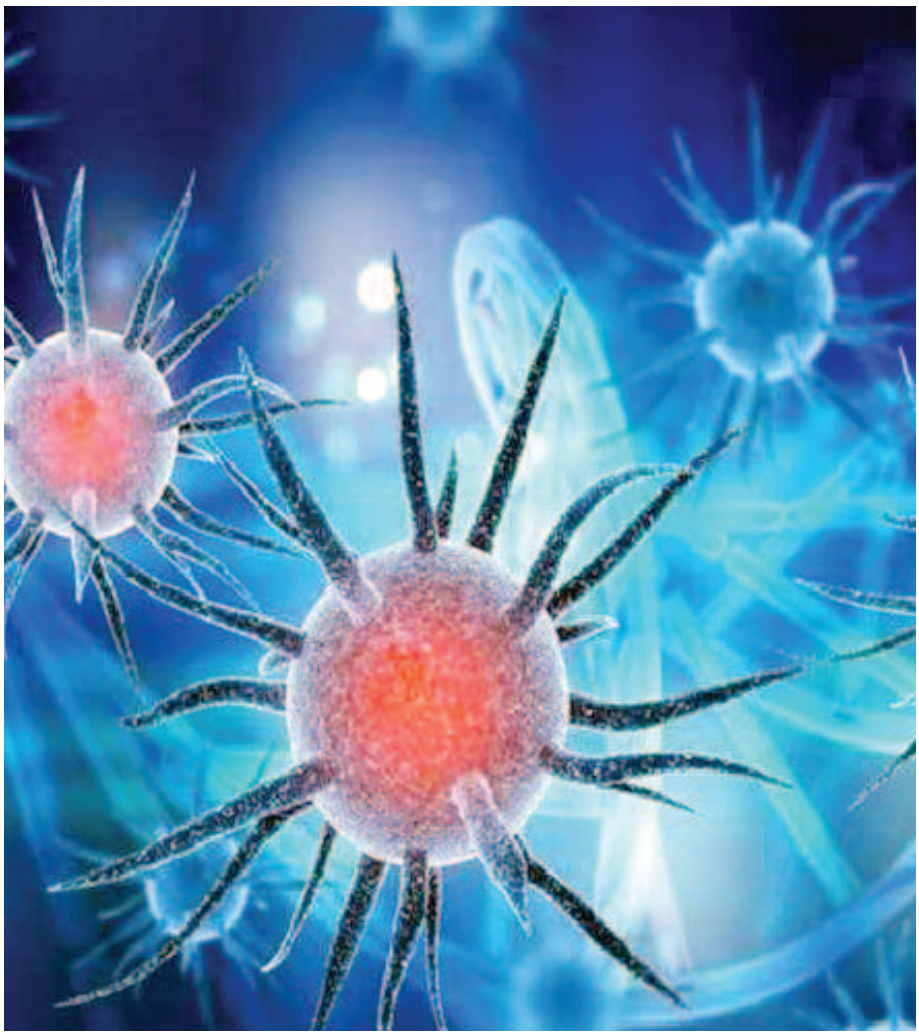

मौजूदा नए वैरिएंट का कम घातक होना भी मौत के आंकड़ों पर थोड़ा असर डाल रहा है. फिर लोग पहले के मुकाबले ज्यादा जागरुक होने लगे और इसके लक्षणों को पहचानकर इलाज कराने लगे हैं.

ऐसे में कोरोना के अंत और उसके तरीकों को लेकर कई सवाल खड़े हो रहे हैं. पहला तो ये कि कोरोना महामारी की पहली लहर 2020 में जहां एक दिन में 97 हजार मामले होने में सितंबर तक का समय लग गया था वहीं, इस साल फरवरी से मई के बीच प्रतिदिन लाखों नए मामले सामने लगे और हजारों की तादाद में मौत होने लगी. कोरोना फैलने की रफ़्तार में इतनी तेजी की वजह क्या हो सकती है?

प्रभु की यह लीला भी परंपार है! कब कैसी लीला रच देगा किसी ने नहीं सोचा!

इस कोरोना के आगे उन बच्चों पर भी रहम नहीं फरमाया जिनके सिर से माता-पिता का साया छिन लिया.. इस संसार में उन लाखों हजारों परिवारों के बारे में नहीं सोचा कि आगे का जीवन कितना संघर्ष की काटों से भरा होगा? यूं हस्ते खेलते परिवार में रातों रात मातम छा जाना. अपने जीवन को लेकर सवालों के कटघरे में खड़ा कर देना.. जिन्दगी को इस कदर खामोश कर देना.. कितना दर्दनाक है.

मध्य प्रदेश ओबीसी आरक्षण

शिवराज सिंह सरकार पर विपक्ष का सीधा निशाना

कहा- किसकी जीत का नमूना है मोदी सरकार काओबीसी संशोधन बिल

सोशल मीडिया प्लेटफार्म कू पर ओबीसी बिल पर पक्ष और विपक्ष के दिख रहे है सुर

देश में ओबीसी आरक्षण को लेकर संसद से सड़क तक घमासान मचा हुआ है। नेताओं और पार्टियों का एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप का दौर भी जारी है। पहले केंद्र पर आरोप लगा कि वह ओबीसी विरोधी है लेकिन इस बीच सरकार ने ऐसा दाव खेला कि सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। मोदी सरकार का ओबीसी संशोधन बिल लोक सभा में पास होने के साथ ही विरोध के सारे सुर थम गए। ऐसा भी कम ही देखने मिलता है जब किसी मुद्दे पर पूरा विपक्ष सरकार के साथ खड़ा नजर आया। हालांकि कांग्रेस की तरफ से यूपी व अन्य राज्यों के चुनावों का हवाला देकर रंग में भंग करने की कोशिश भी की गई। इस पूरे प्रकरण में कई राज्य सरकारों के वजीर-ए-आला भी सुर्खियों में बने हुए हैं, मसलन मध्य प्रदेश में शिवराज सरकार पर पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने गंम्भीर आरोप लगाए हैं। कमलनाथ ने मंगलवार को एक कू पोस्ट के जरिये अपनी भड़ास निकाली। उन्होंने अपनी सरकार में आरक्षण से जुड़े तथ्यों का हवाला देने हुए लिखा कि "मेरी सरकार द्वारा ओबीसी वर्ग के उत्थान के लिये दिनांक 8 मार्च 2019 को ओबीसी वर्ग के आरक्षण को 14% से बढ़ाकर 27% करने का निर्णय लिया गया था। इसको चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में कुछ

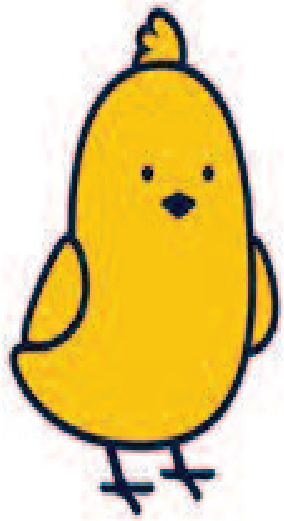

याचिकाएं लगी।"

https://www.kooapp.com/koo/office-ofknath/c65e5cab-4810-4034-9172-d219fe92e019

उन्होंने सीधा आरोप लगाया कि शिवराज सरकार ने आरक्षण के पक्ष में कोई ठोस कदम नहीं उठाये। सोशल मीडिया पर भी उनकी ये बात जंगल में आग की तरह फैल रही है। प्रश्न उठ रहे हैं कि रउ रळ या डइउ के हितों के लिए कौन सही है। क्या मध्य प्रदेश की जनता के साथ उनके मामा ही बेरुखी से पेश आ रहे हैं या कमलनाथ पिछड़े वर्ग के सबसे बड़े हितैषी होते हुए भी लाचारी के आड़े छिपे हुए हैं। फिर इस सम्पूर्ण प्रकरण में कू जैसे स्वदेसी सोशल मीडिया प्लेटफार्म भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जिसने 40 सालों से लंबित पड़े मामले को कुछ ही रोज में परिणाम के समीप पहुंचा दिया है। उधर बिहार में तेजस्वी यादव भी केंद्र के साथ, नितीश सरकार को इस मुद्दे पर घेरने में लगे हुए हैं। उन्होंने इसके पहले नीट छात्रों का मुद्दा उठाकर कुछ आंकड़े पेश किये थे जिसके तहत पिछले पांच सालों में 11 हजार से अधिक छात्रों को आरक्षण के लाभ से वंचित रखने की बात कही गई है। उधर बिहार के मुख्यमंत्री ने भी राज्य सभा ने मुद्दा उठाया। मामले को तूल पकड़ता देख सरकार ने ऐसा तुरुप का पत्ता फेंका कि सारा विपक्ष एक ही बार में नतमस्तक हो गया। इस संसोधन की खास बात यह है कि इसके बाद राज्य सरकारें और केंद्र शासित प्रदेश अपनी जरूरतों के हिसाब से ओबीसी की लिस्ट तैयार कर सकेंगे।

ओबीसी आरक्षण की मांग पिछले लम्बे समय से चल रही थी। ऐसे में महाराष्ट्र में मराठा गुजरात में पटेल और हरियाणा में जाटों की मांग भी पूरी हो सकेगी। उधर मोदी सरकार ने साफ कर दिया कि अब अंडरग्रैजुएट और पोस्टग्रैजुएट के सभी मेडिकल और डेंटल कॉलेजों में अखिल भारतीय कोटा योजना के तहत ओबीसी वर्ग के 27% और ईडब्ल्यूएस वर्ग के 10% छात्रों को आरक्षण मिलेगा। आप इसे सामाजिक न्याय की जीत या संघर्ष की विजय बोल सकते हैं। लेकिन इसके बाद भी कुछ प्रश्न हमेशा के लिए प्रश्न ही रह जाएंगे, कि क्या आरक्षण से वंचित वर्गों के साथ यह हर प्रकार से न्याय होगा, या उनका प्रश्न उठाना जायज नहीं माना जाएगा, या फिर हमारा देश कभी आरक्षण के जहर से मुक्त ही नहीं हो पाएगा।

ललन सिंह बने जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष

दिल्ली में जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के के लिए सर्वसम्मति से ललन सिंह को जदयू का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिया गया है। केंद्रीय मंत्री आरसीपीसी सिंह ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद से इस्तीफा दिया है। जंतर-मंतर स्थित पार्टी कार्यालय में हो रही इस बैठक में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी शामिल थे। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद ललन सिंह ने कहा कि आरसीपी सिंह पहले पार्टी का काम देख रहे थे, उस काम को उन्होंने जहां तक पहुंचाया उसे आगे ले जाना और बिहार के गांवों व अन्य प्रदेशों तक पहुंचाना पार्टी की प्राथमिकता होगी। सभी नेताओं और महत्वपूर्ण साथियों से विचारविमर्श के आधार पर संगठन को मजबूत किया जाएगा। बता दें कि जेडीयू के अध्यक्ष पद की रेस में राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह का नाम सबसे आगे चल रहा था। ललन सिंह सीएम नीतीश कुमार के बेहद नजदीकी माने जाते हैं। राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह वर्तमान में मुंगेर लोकसभा सीट से जेडीयू के सांसद हैं। नीतीश कुमार से इनकी गहरी दोस्ती वर्ष 1970 में हुई थी। ललन सिंह को पार्टी के संस्थापक सदस्य के रूप में जाना जाता है। ललन सिंह पार्टी बनने के बाद से अब तक नीतीश के साथ जुड़े हुए हैं। हालांकि कुछ साल पहले दोनों के बीच मतभेद भी हुए थे लेकिन यह ज्यादा दिन तक नहीं चला। वहीं बैठक से पहले जदयू राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाल रहे आरसीपी सिंह ने कहा था कि 'नीतीश कुमार से उनके संबंध वर्षों से हैं और आगे भी रहेंगे। हमारे संबंध का कोई पैमाना नहीं है। वे हमारे नेता हैं और सालों तक उनके साथ काम किया है। आगे भी करेंगे। संगठन है तो पार्टी है। तभी मैं मंत्री और हमारे नेता मुख्यमंत्री हैं। मैं संगठन और मंत्री दोनों का काम मजबूती से करूंगा, लेकिन निश्चित रूप से पार्टी तय करेगी तो मैं यह जिम्मेदारी किसी मजबूत साथी को देने से पीछे नहीं हटूंगा।" वहीं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बधाई देते हुए कहा कि ललन सिंह हमारी पार्टी के बहुत वरिष्ठ साथी हैं। शुरू से ही साथ रहे हैं। आरसीपी सिंह ने आज की बैठक में खुद ही कहा और ललन जी का प्रस्ताव भी रखा। सर्वसम्मति से सब लोगों ने उसे स्वीकार किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के पहले ही पदाधिकारियों की बैठक में ही लोगों ने प्रस्ताव तैयार किया था और आज उसे रखा जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया कि जाति आधारित जनगणना होनी चाहिए। ये राष्ट्र के और सभी लोगों के हित में है क्योंकि एक बार सब फीगर जानना बहुत जरूरी है।

प्रधानमंत्री जी का 'हर घर जल' का सपना जल्द होगा पूरा- प्रहलाद सिंह पटेल

कोमल सुल्तानिया

जलशक्ति मंत्रालय में केंद्रीय राज्यमंत्री के रूप में पदभार संभालने के बाद श्री प्रहलाद सिंह पटेल एक्शन मोड में आ गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हर घर जल के सपने को साकार करने के लिए बैठकों का दौर शुरू हो गया। आज उन्होंने अंत्योदय भवन में केंद्रीय राज्यमंत्री श्री बिश्वेश्वर टुडू जी व अन्य अधिकारियों के साथ स्वच्छ जल अभियान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना है कि हर घर जल पहुंचे। दूर-दराज के गांव भी इससे अछुते नहीं होने चाहिए। यह हम सब की जिम्मेदारी है और हर परिवार का अधिकार जो उन्हें मिलना चाहिए। देश में कोई घर ऐसा नहीं होना चाहिए जहां नल ना हो। सिर्फ 22 महीनों में इन्सेफेलाइटिस से प्रभावित पांच राज्यों में 97 लाख परिवारों को नल के पानी की आपूर्ति मिली। जल जीवन मिशन के तहत इन्सेफेलाइटिस निवारक उपायों को मजबूत करते हुए 2021-22 के लिए जेई-एईएस घटक के रूप में पांच राज्यों को 463 करोड़ रुपए आवंटित किये गए। उन्होंने कहा कि ऐसी उपलब्धि माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में ही संभव है, ऐसे उपलब्धि भरे कार्यों से न सिर्फ उत्साह बढ़ता है बल्कि संतुष्टि भी मिलती हैं। इसके अलावा केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के महत्वाकांक्षी स्वच्छ भारत अभियान पर भी समीक्षा बैठक हुई जिसमें केंद्रीय राज्यमंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, केंद्रीय राज्यमंत्री श्री बिश्वेश्वर टुडू और मंत्रालय के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

जानिए क्यों खौल उठा था फूलन देवी का खून

22 ठाकुरों को मारने की असली वजह ?

उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में जन्मी एक लड़की, जो एक कांड की वजह से देशभर में मशहूर हो गई। एक खतरनाक डकैत, जिसकी जिंदगी पर फिल्म तक बन गई। दो बार चुनाव जीती और संसद पहुंची। वो लड़की जो अपनी मौत के 20 साल बाद भी उत्तर प्रदेश की राजनीति में 'सक्रिय' है। हम बात कर रहे हैं फूलन देवी की, जिनकी 10 अगस्त को जयंती (बर्थ एनिवर्सिरी) है।

बचपन से झेला लड़की और पिछड़ी जाति होने का दर्द

फूलन देवी का जन्म 10 अगस्त 1963 को उत्तर प्रदेश में जालौन के घूरा का पुरवा में एक गरीब और छोटी जाति' वाले परिवार में हुआ था। पिता मल्लाह देवी दीन थे। फूलन अपने छह भाई-बहनों में दूसरे नंबर पर थीं। लड़की और पिछड़ी जाति होने के दर्द फूलन ने बचपन से ही झेला। फूलन बचपन से ही गुस्सैल स्वभाव की थीं, उसने अपनी मां से सुना था कि चाचा

ने उनकी जमीन हड़प ली थी। इस वक्त फूलन की उम्र 10 वर्ष थी। उसने जमीन के लिए धरना दे दिया। चचेरे भाई के सिर पर ईंट मार दी।

11 साल की उम्र 30 साल के व्यक्ति से करा दी गई शादी, सहे जुल्म

फूलन को इस गुस्से की सजा मिली। फूलन का शादी 11 साल की उम्र में ही 30 साल से अधिक उम्र वाले व्यक्ति से करा दी गई। एक गाय की कीमत पर फूलन का सौदा किया गया था। शादी के बाद पति ने फूलन पर जुल्म किए। वह फूलन से मारपीट करता था। परेशान होकर वह किसी तरह अपने पति के चंगुल से छूटकर भाग निकली। कुछ दिन बाद उसके भाई ने उसे वापस ससुराल भेज दिया। ससुराल पहुंचने पर फूलन को पता चला कि उसके पति ने दूसरी शादी कर ली है। पति और उसकी नई पत्नी ने फूलन की बेइज्जत किया, जिसके बाद उसे घर छोड़कर आना पड़ा।

शायद किस्मत को यही मंजूर था'

इसके बाद फूलन डाकुओं के गैंग से जुड़े कुछ लोगों के साथ उठने-बैठने लगी। फूलन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है- शायद किस्मत को यही मंजूर था। फूलन क उम्र 18 साल थी, जब बेहमई गांव में ऊंची जाति के अपराधियों के एक समूह ने उसका गैंगरेप किया। बेहमई गांव में फूलन को दो हफ्ते तक बंधक बनाकर रखा गया और तब तक गैंगरेप किया गया, जब तक उसने होश नहीं खो दिए।

फूलन ने 22 ठाकुरों को लाइन में खड़ा करके मार दी गोली

इसके बाद फूलन ने वो काम किया जिसकी वजह से वह देशभर में चर्चा में आ गई। फूलन डाकुओं के गैंग में शामिल हो गई। पुलिस और रिश्तेदारों की साजिशों की शिकार होने के बाद फूलन एक रिश्तेदार की मदद से बागी बन गई। छोटे-मोटे अपराधों से शुरू हुआ सिलसिला 22 लोगों की एक साथ हत्या तक पहुंच गया। डकैतों के ग्रुप में शामिल होकर फूलन उसकी मुखिया बन बैठी। साल 1981 में फूलन बेहमई गांव लौटी और उसने उन दो लोगों की पहचान कर ली, जिसने उसके साथ रेप किया था। उसने दोनों से बाकी लोगों के बारे में पूछा। जब किसी ने कुछ नहीं बताया तो फूलन ने गांव से 22 ठाकुरों को निकालकर एक लाइन में खड़ा किया और गोली मार दी। यही वो हत्याकांड था, जिसने फूलन देवी की छवि एक खूंखार डकैत की बना दी। ऊंची जाति के लोग फूलन को वहशी हत्यारिन घोषित करने में जुटे थे, और इधर पिछड़ों के लिए फूलन, देवी दुर्गा का अवतार बन गई थी। उन्हें दस्यु सुंदरी, दस्यु रानी जैसे नाम भी दिए जाने लगे थे।

सरेंडर, 11 साल जेल फिर बाहर आई फूलन

इस हत्याकांड ने तत्कालीन पीएम इंदिरा गांधी का ध्यान भी आकर्षित किया। सरकार ने बीहड़ में डाकू की समस्या समाधान निकालने की कार्रवाई शुरू कर दी। आखिर में डकैत फूलन देवी सरेंडर को राजी हुई, लेकिन कुछ शर्तें रखीं। फूलन ने शर्त रखी कि उनकी

गैंग के सदस्यों को फांसी नहीं दी जाएगी। पिता की जमीन उसे वापस की जाएगी और उसके भाई-बहनों को सरकारी नौकरी दी जाए। लंबे वक्त तक चले मुकदमे के बाद 1994 में तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने उन पर मुकदमे वापस लिए और फूलन जेल से बाहर आईं।

दो बार चुनाव जीतीं, दिल्ली में कर दी गई हत्या

फूलन पर 22 हत्या, 30 डकैती और 18 अपहरण के मामले थे। फूलन 11 साल जेल में रहीं, इसके बाद मुलायम सिंह की सरकार ने 1993 में उन पर लगे सारे आरोप वापस लेने का फैसला किया। 1994 में फूलन देवी जेल से छूट गईं। इसके बाद उनकी शादी उम्मेद सिंह से हो गई। 1996 में फूलन देवी ने समाजवादी पार्टी से चुनाव लड़ा और जीत गईं। फूलन मिजार्पुर से सांसद बनीं और दिल्ली के अशोका रोड के आलीशान बंगले में रहने लगी। फूलन दलितों की मसीहा के तौर पर पहचानी गईं। 25 जुलाई 2001 को तीन नकाबपोशों ने फूलनदेवी को उनके दिल्ली के घर के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी थी।

देवभूमि से विदा हुए तीरथ

उत्तराखंड में सियासी हलचल तेज है। भाजपा नेतृत्व की निगाहें मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत पर टेढ़ी हैं लिहाजा उन्होंने राजभवन जाकर गवर्नर बेबी रानी मौर्या को अपना इस्तीफा सौंप दिया है। रावत को सत्ता संभाले ज्यादा दिन नहीं हुए हैं। उन्होंने इसी साल 10 मार्च को मुख्यमंत्री के पद की शपथ ली थी। इस तरह वो मात्र 115 दिन ही मुख्यमंत्री रहे। इस दौरान वे अपने फैसलों की बजाय मूर्खतापूर्ण बयानों को लेकर ज्यादा चर्चित हुए। तीरथ सिंह रावत के बयानों की वजह से संसद से लेकर सड़क तक भाजपा के प्रति लोगों में उबाल देखा गया। सोशल मीडिया पर रावत की और पार्टी की जमकर फजीहत हुई। उनके बयानों की वजह से सोशल मीडिया पर हैशटैग की मानो बाढ़ ही आ गयी। उनके कई बयानों की तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आलोचना हुई है।

राजभवन से निकल कर रावत इस्तीफा प्रकरण पर तो चुप्पी साधे रहे मगर मीडिया कैमरों के सामने अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाकर चले गए। बाद में कुछ मीडियाकर्मियों से उन्होंने कहा ह्यमैंने संवैधानिक संकट की वजह से राज्यपाल को इस्तीफा दिया है। राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर सेवाएं देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह और जेपी नड्डा का आभार व्यक्त करता हूं। मगर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक ने मामले पर थोड़ा प्रकाश डाला और कहा कि कोविड के चलते परिस्थितियां ऐसी बन गई थीं कि मुख्यमंत्री को इस्तीफा देना पड़ा। इसके अलावा वे अभी राज्य के किसी सदन के सदस्य भी नहीं थे। यही बात उनके मुख्यमंत्री बने रहने के आड़े आ रही थी। चुनाव आयोग ने साफ कर दिया था कि ऐसी महामारी में वह उपचुनाव नहीं कराएगा। इससे राज्य में संवैधानिक संकट हो सकता था। इसलिए मुख्यमंत्री ने इस्तीफा दिया है। अब भाजपा के विधायक दल की बैठक के बाद विधायकों में से ही किसी को मुख्यमंत्री चुना जाएगा। राज्य में अगले साल फरवरी-मार्च महीने में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में नए मुख्यमंत्री का कार्यकाल महज 7-8 महीने का रहेगा।

हालांकि रावत के पास अभी 2 महीने का वक़्त था और 6 माह पूरा होने से पहले वे इस्तीफा देकर दोबारा शपथ ले सकते थे, लेकिन भाजपा को अगले साल के शुरू में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले ऐसा करना ठीक नहीं लगा। मुख्यमंत्री बनने के बाद लगातार विवादित बयान देकर भाजपा की फजीहत कराने वाले तीरथ सिंह रावत की इसीलिए भी जल्दी विदाई हो गई क्योंकि भाजपा उनके नेतृत्व में प्रदेश चुनाव करवाने का रिस्क हरगिज नहीं उठाना चाहती है।

गौरतलब है कि तीरथ सिंह रावत ने प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर कोई ऐसा फैसला नहीं लिया जिसकी तारीफ हुई हो, बल्कि वे अपने मूर्खतापूर्ण बयानों और कार्यों के कारण ही ज्यादा चर्चित रहे। कोरोना महामारी से प्रदेश को बचाने की बजाय महामारी को स्प्रेड करने के लिए रावत की काफी आलोचना हुई है। कुम्भ मेले में ना तो उन्होंने सख्ती बरती और ना ही वहां आने वालों का आरटीपीसीआर करवाया गया। मूर्खता की हद तो तब हुई जब उन्होंने कहा कि कुंभ कई सालों में एक बार आता है। उसमें सख्ती दिखाने की जरूरत नहीं है। हरिद्वार कुंभ में आने के लिए कोई आरटीपीसीआर रिपोर्ट की जरूरत नहीं है। कोई भी आकर स्नान कर सकता है। इस बयान के बाद काफी सियासी बवाल मचा था और रावत की फजीहत तब और ज्यादा हुई जब कुम्भ में आने वाले तमाम साधू-संत कोरोना की चपेट में आ गए।

कुंभ के दौरान तीरथ सिंह रावत ने जिस तरह से भीड़ को जमा होने की छूट दी और उसके बाद कोरोना जांच के नाम पर फजीवाड़े में उनके करीबियों का नाम उछला, उससे उनकी स्थिति काफी खराब हो गई। वैसे भी तीरथ जिस तरह से काम कर रहे थे, उससे भाजपा को लगने लगा था कि आगामी चुनाव में उसकी नैया पार नहीं लगने वाली। तीरथ को हालांकि भाजपा केंद्र में भी पद दे सकती है, क्योंकि वह पौड़ी गढ़वाल सीट से सांसद भी हैं।

महिला की जींस पर टिप्पणी

राजधानी देहरादून में नशे को लेकर एक कार्यशाला में तीरथ सिंह रावत ने बयान दिया कि युवाओं को फटी जींस पहनकर घूमता देख उन्हें काफी आश्चर्य होता है। अपनी एक फ्लाइट का किस्सा मीडिया को सुनाते हुए उन्होंने कहा था झ्र फ्लाइट में सफर करने के दौरान एक महिला से उनकी मुलाकात हुई। महिला एनजओ चलाती थी। वह महिला फटी जींस पहनती है। बच्चों के साथ समाज के बीच जाती हैं, तो क्या संस्कार देंगी? फटी जींस वाले बयान के बाद शॉर्ट्स पर बयान से तीरश रावत बुरे फंसे थे। उनका ये बयान सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ। उन्होंने अपने कॉलेज का भी एक किस्सा शेयर करते हुए कहा था कि शॉर्ट्स पहनकर कॉलेज आई एक लड़की के पीछे लड़के भागने लगे थे। इस तरह के बयान उनकी संकुचित मानसिकता को उजागर करते रहे और भाजपा की नकारात्मक छवि बनाते रहे।

मोदी की तुलना कृष्ण से कर दी

उनकी चाटुकारिता का गजब नमूना तब देखने को मिला जब हरिद्वार दौरे के दौरान तीरथ सिंह रावत ने कहा कि पीएम मोदी त्रेता और द्वापर युग के कृष्ण है। राम ने समाज के लिए काम किया था, इसलिए वे भगवान कहलाए। आने वाले समय में लोग मोदी को भी इसी रूप में देखेंगे।

भारत को अमेरिका का गुलाम बता दिया

रावत की शिक्षा-दीक्षा और ज्ञान पर तब सवाल खड़ा हुआ जब एक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने हैरान करने वाला बयान दे डाला। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने हम पर 200 सालों तक राज किया। दरअसल रावत अमेरिका और ब्रिटेन में कन्फ्यूज हो गए। उनके इस बयान की भी सोशल मीडिया पर काफी फजीहत हुई थी।

अरुणोदय हो चुका वीर अब कर्मक्षेत्र में जुट जाएं...'

5 अगस्त, 2020 को अयोध्या में श्री राम जन्मस्थान पर भव्य मंदिर के निर्माण का नेत्रदीपक समारंभ समूचे भारत, और विश्व भर में फैले भारतीय मूल के लोग और भारत प्रेमियों ने जी भर कर देखा। अगणित लोगों को यह दृश्य एक स्वप्न पूर्ति का अनुभव और आनंद दे गया। लंबे संघर्ष के बाद यह महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त हुई थी। असंख्य भारतीयों के चेहरों पर समाधान का तेज और आंखों में हर्ष के आंसू भी देखने को मिले। कई लोगों के लिए यह कार्य पूर्ति का क्षण था। परंतु वास्तव में यह कायार्रंभ का क्षण है।

अनेकों के विचार में यह केवल मंदिर निर्माण कार्य आरंभ होने का अवसर था, परंतु भारतीय परंपरा, चिंतन और दर्शन, एकात्म और सर्वांगीण है। वह जीवन को समग्रता से देखता है। भारत में धर्म और सामाजिक जीवन एक दूसरे से भिन्न नहीं देखे गए हैं। इस भारतीय दर्शन ने प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का अंश है यह मानकर उस ईशत्व को प्रकट करते हुए मोक्ष-प्राप्ति का ध्येय मनुष्य के सामने रखा। अपने अंतर्गत और बा प्राकृति का नियमन करते हुए इस ईशत्व के प्रकट करने के मार्ग उस व्यक्ति की क्षमता और रुचि के अनुसार अनेक और विभिन्न हो सकते हैं और सभी समान हैं, ऐसी भारतीय मान्यता है, और इसे भारत जीता भी आया है।

भारत के इसी इतिहास को समूचे विश्व ने समय-समय पर अनुभव किया। परंतु इस आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए भी भारत ने कभी भौतिक संपन्नता और समृद्धि की अनदेखी नहीं की। इसलिए पुरुषार्थ चतुष्टय में यहां धर्म और मोक्ष के साथ अर्थ और काम का समावेश भी है।

सभी इकाइयों का समुच्चय हमारा मानव जीवन

एक अफ्रीकन संकल्पना है। उसका अर्थ है- मैं हूँ, क्योंकि हम हैं। भारत में धर्म की कल्पना का आधार भी यही है। मैं, मेरा परिवार, ग्राम, राज्य, राष्ट्र, मानवता, मानवेतर जीव सृष्टि, निसर्ग ये सभी परस्पर जुड़ी हुई क्रमशः विस्तारित होने वाली विभिन्न इकाइयां हैं, यह एकात्म है। इनमें परस्पर संघर्ष नहीं, समन्वय है; स्पर्धा

नहीं, संवाद है। इन सभी इकाइयों का समुच्चय हमारा मानव जीवन है। ये सब हैं इसीलिए हम सब हैं। इन के बीच का संतुलन धर्म है और यह संतुलन बनाए रखना ही धर्म स्थापना है। भारत की इस धर्म दृष्टि को केवल रिलिजन तक सीमित रखना गलत है और उसे केवल आध्यात्मिकता तक सीमित रखना भी अपर्याप्त है। भारत ने आध्यात्मिक साधना करते समय भौतिक समृद्धि का विरोध या निषेध कभी नहीं किया है।

विद्या के आधार पर अमरत्व

भारतीय दर्शन में धर्म की एक परिभाषा है ह्यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः। अभ्युदय का अर्थ है भौतिक समृद्धि और निःश्रेयस का अर्थ है मोक्ष। इन दोनों को जो साधता है वह धर्म है ऐसा कहा गया है। ईशावास्य उपनिषद में भौतिक समृद्धि साधने के लिए आवश्यक ज्ञान को अविद्या और मोक्ष साधने के ज्ञान को विद्या कहा है। उपनिषदकार कहते हैं, जो अविद्या और विद्या दोनों की उपासना करता है वही पूर्ण जीवन है। वह अविद्या के आधार पर इस मृत्यु लोक को सुख पूर्वक पार करता है और विद्या के आधार पर अमरत्व (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

विद्याञ्च अविद्याञ्च यस्तद् वेदो रभयम् सह
अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यया रमृतमश्नुते

सैकड़ों वर्षों तक भारत दुनिया का सर्वाधिक समृद्ध देश

अनेकों के विचार में यह केवल मंदिर निर्माण कार्य आरंभ होने का अवसर था, परंतु भारतीय परंपरा, चिंतन और दर्शन, एकात्म और सर्वांगीण है। वह जीवन को समग्रता से देखता है। भारत में धर्म और सामाजिक जीवन एक दूसरे से भिन्न नहीं देखे गए हैं। इस भारतीय दर्शन ने प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का अंश है यह मानकर उस ईशत्व को प्रकट करते हुए मोक्ष-प्राप्ति का ध्येय मनुष्य के सामने रखा। अपने अंतर्गत और बा प्राकृति का नियमन करते हुए इस ईशत्व के प्रकट करने के मार्ग उस व्यक्ति की क्षमता और रुचि के अनुसार अनेक और विभिन्न हो सकते हैं और सभी समान हैं, ऐसी भारतीय मान्यता है, और इसे भारत जीता भी आया है। भारत के इसी इतिहास को समूचे विश्व ने समय-समय पर अनुभव किया। परंतु इस आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए भी भारत ने कभी भौतिक संपन्नता और समृद्धि की अनदेखी नहीं की।

इस संतुलन या धर्म को समझने की विशेष गुणवत्ता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा लाखों कंठों से देशभर में रोज कहीं जाने वाली संघ प्रार्थना में समुत्कर्ष (अभ्युदय) और निःश्रेयस दोनों को साधने की बात करी गई। असल में ये दो नहीं एक ही के दो पहलू हैं। यही जताने को एकवचनी षष्ठी प्रत्यय अस्य (समुत्कर्ष निःश्रेयसस्य) का प्रयोग किया गया है। तात्पर्य यह कि भारत में जीवन के पूर्ण विचार की ही परम्परा रही है जिसमें भौतिक(समृद्धि) और आध्यात्मिक(मोक्ष) उत्कर्ष का एक साथ विचार किया है। सैकड़ों वर्षों तक भारत दुनिया का सर्वाधिक समृद्ध देश था। सामर्थ्य संपन्न होने पर भी भारत ने अन्य देशों पर युद्ध नहीं लादे। व्यापार के लिए दुनिया के सुदूर कोनों तक जाने के बावजूद भारत ने न उपनिवेश बनाए, न ही उनका शोषण किया, न उन्हें लूटा, न ही उन्हें कन्वर्ट किया और न उन्हें गुलाम बनाकर उनका व्यापार किया।

हमारे लोगों ने वहां के स्थानीय जन समूहों को संपन्न, समृद्ध और तो और सुसंस्कृत किया। उस सांस्कृतिक विरासत का सजीव दर्शन आज भी दक्षिण एशिया स्थित देशों की भाषाओं, कला, मंदिरों और जीवन शैली में देखने को मिलता है। वह समृद्धि जो भारतीयों ने अन्य देशों में जा कर उन्हें समृद्ध व सक्षम बनाते हुए अर्जित की उसे हमारे आध्यात्मिक दर्शन में महालक्ष्मी कहा गया। यहां धन को नहीं धनलक्ष्मी, महालक्ष्मी को पूजा जाता है। इसीलिए हमारी सम्पन्नता

का, हमारे सुसंस्कृत सदाचार का आधार धर्म ही रहा और इस धर्म स्थापना व साधना के केंद्र मंदिर रहे हैं कारण समग्र जीवन के सम्पूर्ण चिंतन का आधार आध्यात्मिक है। इसीलिए भारत में मंदिर आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ श्रेष्ठ लोकाचार और आर्थिक समृद्धि के कारण रहे है और केंद्र भी।

सोमनाथ के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा

1951 में सोमनाथ के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करते समय स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद के भाषण में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। उसके कुछ अंश मूल स्वरूप में ही पढ़ना उदबोधक होगा। वे कहते हैं:-

।। ह्लइस पुनीत अवसर पर हम सब के लिए यह उचित है कि हम आज इस बात का व्रत लें कि जिस प्रकार हमने आज अपनी ऐतिहासिक श्रद्धा के इस प्रतीक में फिर से प्राण-प्रतिष्ठा की है, उसी प्रकार हम अपने देश के जन साधारण के उस समृद्धि मंदिर में भी प्राण-प्रतिष्ठा पूरी लगन से करेंगे जिस समृद्धि मंदिर का एक चिन्ह सोमनाथ का पुराना मंदिर था।"

उस ऐतिहासिक काल में हमारा देश जगत का औद्योगिक केन्द्र था। यहां के बने हुए माल से लदे हुए कारवां दूर दूर देशों को जाते थे और संसार का चांदी-सोना इस देश में अत्यधिक मात्रा में खिंचा चला आता था।

हमारा निर्यात उस युग में बहुत था और आयात बहुत कम। इसलिए भारत उस युग में स्वर्ण और चांदी का भंडार बना हुआ था। आज जिस प्रकार समृद्ध देशों के बैंकों के तहखानों में संसार का स्वर्ण पर्याप्त मात्रा में पड़ा रहता है उसी प्रकार शताब्दियों पूर्व हमारे देश में संसार के स्वर्ण का अधिक भाग हमारे देवस्थानों में होता था। मैं समझता हूं कि भगवान सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण उसी दिन पूरा होगा जिस दिन न केवल इस प्रस्तर की बुनियाद पर यह भव्य भवन खड़ा हो गया होगा, वरन भारत की उस समृद्धि का भी भवन तैयार हो गया होगा जिसका प्रतीक यह पुरातन सोमनाथ का मंदिर था। साथ ही सोमनाथ के मन्दिर का पुनर्निर्माण तब तक भी मेरी समझ में पूरा नहीं होगा जब तक कि इस देश की संस्कृति का स्तर इतना ऊंचा न हो जाए कि यदि कोई वर्तमान अलबरूनी हमारी वर्तमान स्थिति को देखें तो हमारी संस्कृति के बारे में आज की दुनिया को भी वही बताएं जो भाव उस ने उस समय प्रकट किए थे।

राम मंदिर का आंदोलन भारत की उस जीवन-दृष्टि की पुनर्स्थापना का आंदोलन था, जिसे आड़ में भारत से ही अलग करने का ष्डयंत्र रचा जा रहा था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत ने राम मंदिर शिलान्यास के दिन अपने उद्बोधन में तीन शब्दों का उल्लेख किया था। आत्मनिर्भर, आत्मविश्वास और आत्मभान। इसमें आत्मनिर्भरता ज्ञान (भारतीय ज्ञान-विद्या और अविद्या भी) और आर्थिक संदर्भ में है। आत्मविश्वास अपने प्राचीन, नित्य-नूतन, चिर पुरातन अध्यात्म-आधारित एकात्म, सर्वांगीण समग्र जीवन के चिंतन के आधार पर हम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे विश्वास और कृतिशील संकल्प के संदर्भ में हैं और आत्मभान इस भारतीय दर्शन को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक और राष्ट्रीय जीवन में पूर्ण उत्कटता के

राम मंदिर का आंदोलन भारत की उस जीवन-दृष्टि की पुनर्स्थापना का आंदोलन था, जिसे आड़ में भारत से ही अलग करने का ष्डयंत्र रचा जा रहा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत ने राम मंदिर शिलान्यास के दिन अपने उद्बोधन में तीन शब्दों का उल्लेख किया था। आत्मनिर्भर, आत्मविश्वास और आत्मभान। इसमें आत्मनिर्भरता ज्ञान (भारतीय ज्ञान-विद्या और अविद्या भी) और आर्थिक संदर्भ में है। आत्मविश्वास अपने प्राचीन, नित्य-नूतन, चिर पुरातन अध्यात्म-आधारित एकात्म, सर्वांगीण समग्र जीवन के चिंतन के आधार पर हम प्राप्त कर सकते हैं।

साथ अभिव्यक्त करने में है।

यही बात श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वदेशी समाज में कहते हैं-हम वास्तव में जो हैं वही बनें। ज्ञानपूर्वक, सरल और सचल भाव से, संपूर्ण रूप से हम अपने-आपको प्राप्त करें।

जितनी गहराइयों से हम अपनी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जड़ों से जुड़ेंगे उतने ही हम अपनी आर्थिक सम्पन्नता और सांस्कृतिक विस्तार से, स्पर्धा, संघर्ष, हिंसा, युद्ध, शोषण, अत्याचार से ग्रस्त इस मानवता को संवाद, समन्वय, संयम और आत्मीयता का परिचय दे पाएंगे। अपने आचरण से पांथिक, वांशिक, भाषिक, सांस्कृतिक दृष्टया वैविध्यपूर्ण मानव जगत को शांति, समृद्धि से पूर्ण, विश्व-मंगलकारी मार्ग पर ले जा सकेंगे। इसी विचार का सार डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद के सोमनाथ मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के भाषण की इस पंक्ति में है- यह सारा प्राप्त करने का केंद्र, स्थान मंदिर हुआ करता था। यह मंदिर भी वैसा केंद्र फिर से बने यह अपेक्षा है। तभी मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण हुआ ऐसा मैं मानूंगा।

संकल्प पूर्ति का क्षण

यही बात आज की अयोध्या के राम मंदिर के विषय में भी प्रासंगिक है। इसीलिए यह एक संकल्प पूर्ति का क्षण भी है और एक शुभारंभ भी। एक और बात समझने जैसी है। राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण ऐसे कई प्रलंबित निर्णय अभी एक के बाद एक होते दिख रहे हैं। इसका कारण भी महत्वपूर्ण है। 1987 में राम-जानकी रथ यात्रा चल रही थी तब संघ के एक कार्यक्रम में तत्कालीन सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस से एक कार्यकर्ता ने पूछा कि गौ हत्या प्रतिबंध का आंदोलन, कश्मीर के 370 में सुधार आदि विषय, मांग कर के हमने छोड़ दिये, ऐसा लगता है कुछ होता नहीं दिख रहा है। क्या इस राम मंदिर के विषय में भी वैसा ही होगा? तब श्री बालासाहब जी का उत्तर था - ह्लहम इस निमित्त राष्ट्रीय जागरण करते हैं। यह जागरण सतत किसी ना किसी निमित्त से करते रहना चाहिए। आज हिंदू समाज की राष्ट्रीय चेतना का सामान्य स्तर बहुत नीचा है। इसी कारण ये सारी समस्याएं भी हैं। जिस दिन सम्पूर्ण समाज की राष्ट्रीय चेतना का सामान्य स्तर पर्याप्त उन्नत होगा तब हो सकता है इन सभी विषयों के समाधान एक साथ भी हो जाएं। आज श्री बालासाहब जी के शब्दों का स्मरण करते लगता है कि उस भाव को व्यक्त करते समय क्या उनका संकेत की ओर था?

संघ के ज्येष्ठ प्रचारक और श्रेष्ठ चिंतक श्री दत्तोपंत ठेंगडी एक बात हमेशा कहते थे कि समाज में कुछ लोगों का राष्ट्रीय दृष्टि से जागृत और खूब सक्रिय होना शाश्वत परिवर्तन नहीं लाता है। जब सामान्य व्यक्ति की राष्ट्रीय चेतना का स्तर थोड़ा भी ऊंचा उठता है तब बड़े-बड़े परिवर्तन होते हैं। इसीलिए समय-समय पर कुछ मुद्दों को लेकर राष्ट्रीय जागरण के प्रयास सतत करते रहने से धीरे-धीरे सामान्य व्यक्ति की राष्ट्रीय चेतना का स्तर ऊंचा उठेगा। उन सबका परिणाम के नाते राष्ट्रहित के अनेक छोटे-बड़े महत्व के और आवश्यक कार्य सहज होते जाएंगे। इस कारण राष्ट्रीय चेतना समृद्ध करने की दृष्टि से कुछ लोगों को सतत राष्ट्र जागरण के कार्य में ही लगे रहना आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

एक के बाद एक हो रहे मूलभूत परिवर्तन

लगता है कि श्री बालासाहब देवरस जी और श्री ठेंगडीजी द्वारा वर्णित वह टिपिंग पॉईंट निकट आ रहा है। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का वह स्वदेशी समाज सकिय हो रहा है। राष्ट्र जीवन के अनेक क्षेत्रों में, अनेक वर्षों से प्रलंबित राष्ट्र हित के मूलभूत परिवर्तन एक के बाद एक हो रहे हैं। देश की रक्षा नीति और विदेश नीति में मूलभूत परिवर्तन विश्व अनुभव कर रहा है। विकेंद्रित और कृषि आधारित अर्थ नीति के आधार पर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने का संकल्प प्रकट हो रहा है।

भारत की जड़ों से जुड़ कर विश्व के आकाश को आगोश में लेने के लिए ऊंची उड़ान भरने वाले पंख देने वाली नई शिक्षा नीति की घोषणा हुई है। समाज के स्वयं के उद्यम और प्रोत्साहन मिलने का वातावरण बन रहा है। यह सारा एक साथ होता नजर आ रहा है। यह परिवर्तन भारत में 2014 से हुए केंद्र में सत्ता परिवर्तन के साथ जोड़कर देखना स्वाभाविक है। परंतु 16 मई, 2014 के दिन चुनाव के परिणामों की घोषणा होने का बाद 18 मई, रविवार के संडे गार्डियन के महत्वपूर्ण सम्पादकीय में एक मुलभूत और गहरी बात कही गई है।

राष्ट्रीय चेतना का सामान्य स्तर ऊंचा उठने की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप सभी प्रकार के इष्ट परिवर्तन होना शुरू हुआ है और सत्ता परिवर्तन भी इसका भाग है। अपना ईश्वर प्रदत्त दायित्व निभाने के लिए भारतवर्ष अपनी चिर पुरातन नित्य नूतन चिरंजीवी शक्ति के साथ खड़ा हो रहा है। (संघ के एक ज्येष्ठ प्रचारक ने एक वाक्य में संघ का पूर्ण वर्णन किया था । अब तक रुके हुए या रोके गए सभी आवश्यक कार्य होना शुरू हो गए हैं। सम्पूर्ण समाज को सभान, सजग रहकर सक्रिय होना होगा। यह वही आत्मभान है, जिससे आवश्यक आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता अवश्यम्भावी है।

एक संघ गीत में कहा है- अरुणोदय हो चुका
वीर अब कर्मक्षेत्र में जुट जाएं, अपने खून-पसीने द्वारा
नवयुग धरती पर लाएं।

लेखकः डॉ। मनमोहन वैद्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह हैं।

(लेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी विचार हैं।)

ममता बनर्जी का भविष्य!

आज देश में ममता बनर्जी को ले करके यह बात कही जा रही है कि आगामी समय में देश की प्रधानमंत्री हो सकती है पश्चिम बंगाल में जिस तरीके से उन्होंने ह्लखेलाह्व दिखाया उससे जहां भाजपा के होश उड़ गए वहीं सारा विपक्ष ममता बनर्जी का मुरीद बन गया। मगर सबसे बड़ा सत्य यह है कि ममता बनर्जी के पश्चिम बंगाल में ऐतिहासिक विजय भारतीय जनता पार्टी और देश की केंद्रीय सरकार को रास नहीं आई है। शायद यही कारण है कि नंदीग्राम में एक बार जीत की घोषणा हो जाने के बाद चुनाव आयोग से अंततः ममता बनर्जी को पराजय का सर्टिफिकेट मिला। जहां भाजपा 200 प्लस की बात कर रही थी चारों खाने चित हो गई तो ममता बनर्जी की छवि को धूल में मिलाने और आगामी समय में केंद्रीय सत्ता में उनकी महत्वपूर्ण भागीदारी को रोकने के लिए मानो एक चक्रव्यूह बुना जा रहा है।

जी हां! आज जैसा कि देशभर में माना जा रहा है भाजपा किसी भी हद तक ममता बनर्जी को रोकना चाहती है। अगर ममताको संपूर्ण केंद्रीय सरकार की ताकत, पैसा खर्च किए जाने के बाद भी नहीं रोक पाई है तो यह संकेत है कि भाजपा की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। और आप माने या ना माने यह सच है कि भाजपा यह तय कर चुकी है चाहे जो भी हो जाए सत्ता हाथ से नहीं जाने देंगे। अब इसके लिए जो रणनीति बनाई जा रही है उसका उत्तराखंड से आगाज हो गया है देखिए क्या और कैसे?

उपचुनाव नहीं होंगे!

पश्चिम बंगाल में हाल ही में विधानसभा चुनाव संपन्न हुए हैं ।यहां कुल 292 विधानसभा सीटें हैं। अब नंदीग्राम में पराजय के पश्चात ममता बनर्जी को मुख्यमंत्री बने रहने के लिए 6 माह के भीतर किसी एक विधानसभा सीट से चुनाव में जीत दर्ज करनी होगी। वरना पश्चिम बंगाल में संवैधानिक संकट की स्थिति खड़ी हो जाएगी। इसी को लेकर के जहां ममता बनर्जी रणनीतिक तैयारी कर रही हैं वहीं भारतीय जनता पार्टी के रणनीतिकार भी घर में खामोश बैठे हुए नहीं हैं!

भाजपा और उसके रणनीतिकारों का एक ही लक्ष्य है झ किसी भी तरह आने वाले समय में ममता बनर्जी चुनाव में विजयी ना हो। या फिर। इसके लिए रणनीति यह है कि देश में उपचुनाव 6 माह के लिए टाल दिया जाए और कोरोनावायरस के कारण चुनाव आयोग को बहुत ही सहजता के साथ निवेदन करके केंद्र सरकार और विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भाजपा यह कर सकते हैं।

अब आप कल्पना करिए कि अगर ऐसा हुआ तो ममता बनर्जी का भविष्य क्या होगा?

मगर अभी चुनाव आयोग और केंद्र सरकार ने पत्ते नहीं खोले हैं। जहां आप पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी भवानीपुर से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही हैं। क्योंकि यहां से ममता के कृषि मंत्री शोभन देव चट्टोपाध्याय ने

इस्तीफा दे दिया है और यहां उपचुनाव की तैयारी जारी है। मगर इसके बावजूद यह माना जा रहा है कि भाजपा ने राजनीति की चौपड़ पर एक ऐसा खेल खेलने की रणनीति बनाई है जो आजाद भारत में कम से कम अभी तक तो नहीं खेली गई है। देश के एक चुने गए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनकी छवि को लेकर के चिंतित भाजपा और उसके बड़े नेता आखिर क्या खिचड़ी पका रहे हैं इस पर राजनीति के कुल पतियों की निगाह लगी हुई है। अब लाख टके का सवाल यह है कि आखिर आगामी समय में क्या होगा। देखिए! हम कुछ तथ्य आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

तीरथ सिंह रावत की बलि!

उत्तराखंड में कभी हाल ही में भाजपा ने तीरथ सिंह रावत को रातो रात मुख्यमंत्री बना दिया था। जो विधानसभा चुनाव नहीं लड़ पाए और उन्हें विधायक रहने के लिए उपचुनाव का सामना करना था। इस तुरूप के पत्ते के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी ने देश भर में यह संदेश देने का काम किया है कि देश में कोरोना कोविड 19 की स्थिति है तो चुनाव ना हो। अब संविधानिक संकट को देखते हुए भाजपा ने रातों-रात पत्ते फेंट दिए और एक नए शख्स को मुख्यमंत्री की शपथ दिला दी। कुल जमा यह की संदेश यह है कि उपचुनाव के हालात अभी देश में नहीं है! ऐसे में सीधा निशाना ममता बनर्जी है जिनको आगामी 4 माह के भीतर मुख्यमंत्री पद पर बने रहने के लिए भवानीपुर से उप चुनाव जीतना होगा। अब जब चुनाव आयोग हाथ खड़ा कर लेता है तो क्या होगा यह समझने वाली बात है। कुल मिलाकर यह माना जा रहा है कि भाजपा के नेता और केंद्र सरकार विशेष रूप से गृह मंत्री अमित शाह चाहते हैं कि किसी भी हाल में ममता बनर्जी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर नहीं होनी चाहिए। क्या देश में ऐसे हालात बन सकते हैं कि उपचुनाव से चुनाव आयोग हाथ खड़ा कर ले। लेकिन केंद्र सरकार के आग्रह और निवेदन के बाद क्या सुप्रीम कोर्ट भी इस पर मुहर लगा देगी। अगर ऐसा होता है तो ममता बनर्जी को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना होगा और तब शायद अमित शाह और भाजपा की रणनीति सफल हो जाएगी।

जमुई के रहने वाले बिहार के युवा आईपीएस नशे के खिलाफ चला रहे है मुहिम

कड़क पुलिसिया कार्रवाई के साथ, समय निकाल कर लोगों को करते है जागरूक

बिधुरंजन उपाध्याय

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा बिहार में लगाए गए पूर्ण शराबबंदी कानून को शत-प्रतिशत लागू करने हेतु बिहार केडर के आईपीएस अधिकारी लगातार नशे के खिलाफ मुहिम छेड़ कर युवाओं को मोटिवेट कर रहे है।बिहार के जमुई जिला के निवासी सह किशनगंज के पुलिस अधीक्षक कुमार आशीष नशे के विरुद्ध लगातार कृतसंकल्पित होकर कार्य कर रहे है,जिस वजह से लगातार किशनगंज पुलिस शराब की बड़ी-बड़ी खेफ पकड़ रही है एवं इसके आलावे आम जन को नशे से होने वाले नुकसान को लेकर भी युवा पीढ़ी को जागरूक कर रहे है।

देश का युवा जहां एक तरफ नशे का शिकार हो रहा है, वहीं दूसरी ओर लोगों को नशे से सावधान रहने की प्रेरणा देने वाले भी कम नहीं हैं। ऐसी ही एक मुहिम बिहार के किशनगंज के युवा एसपी क्ढर एसपी कुमार आशीष चला रहे है। अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकाल कर लोगों को नशे से दूर रहने के लिए युवा पीढ़ी को एसपी मुहिम चलाकर जागरूक कर रहे हैं। एसपी कुमार आशीष अपनी व्यस्त दिनचर्या एवं ऑफिस के कामो से समय निकालकर खाली वक्त में किशनगंज जिला के सुदूरवर्ती इलाको के गांवों एवं स्कूलों में माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सरकार की अति महत्वाकांक्षी योजना पूर्ण शराबबंदी तथा पूर्ण नशाबंदी के लिए अलख जगाने के लिए प्रयासरत है। नशे जैसी आदत से लोगों को बचाने की एसपी कुमार आशीष की ये मुहिम अब रंग लाने लगी है। अब युवा, स्कूली छात्र-छात्राएं, अभिभावक एवं समाज के प्रबुद्ध नागरिक भी इनके साथ आने लगे हैं।

एसपी कुमार आशीष का कहना है की आज युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में हैं। हमारा प्रयास समाज मे नशे की लत में घिर चुके युवा पीढ़ी को नशा त्यागने की प्रेरणा देने के लिए किया जा रहा हैं। प्रतिक्रिया सकारात्मक है इसलिए कि उम्मीद पर दुनिया कायम है। और हम लोगों को ही सही समय पर नशे की गिरफ्त में आने से पहले अगर बचा ले तो ये हमारे लिए देश सेवा से कम नही होगा। मेरे विचार में कोई भी चीज जिसकी शरीर को तलब महसूस होती है और जिससे शरीर को तकलीफ महसूस हो, उसे नशा कहते हैं, चाहे वो शराब, तम्बाकू, ड्रग्स, गांजा, भांग या अन्य कोई पदार्थ क्यों ना हो। हर प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन आपके जीवन में तबाही लेकर आता है। नशा एक अभिशाप है। यह एक ऐसी बुराई है, जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिए समाज में शराब, गांजा, भांग, अफीम, जर्दा, गुटखा, तम्बाकु और धूम्रपान (बीड़ी,सिगरेट,हुक्का,चिलम) सहित चरस, स्मैक, कोकिन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है इन जहरीले और नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचने के साथ ही इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित होता ही है साथ ही स्वयं और परिवार की सामाजिक स्थिति को भी भारी नुकसान पहुंचाता है। नशे के आदी व्यक्ति को समाज में हेय की दृष्टि से देखा जाता है। नशे करने वाला व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरुप हो जाता है, उसकी समाज एवं राष्ट्र के लिया उपादेयता शून्य हो जाती है। वह नशे से अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप बन जाता है।

उनके जुझारू नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में किशनगंज पुलिस आम नागरिकों के सहयोग से लगातार सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करने में लगी हुई है। पर्याप्त संसाधनों की कमी के बावजूद किशनगंज पुलिस ने पिछले तीन सालों के उनके अब तक के कार्यकाल में निम्नांकित उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की है।

शराबबंदी से किशनगंज पुलिस की उपलब्धि: जनवरी 2018 से जुलाई 2021 तक के आंकड़े:

-शराबबंदी से सम्बंधित 1070 कांड दर्ज हुए, कुल 1194 लोग गिरफ्तार कर जेल भेजे गए हैं। 05 कांडों में माननीय न्यायालय द्वारा आरोपियों को सजा सुनाई जा चुकी है। शराब के 25 कांडों में स्पीडी ट्रायल जारी।

-कुल 33 हजार लीटर से ज्यादा देसी शराब, 94,294 लि० विदेशी शराब सहित कुल 1,27,299 ली० शराब जब्त हुए, 124 दोपहिया एवं 135 चारपहिया सहित कुल 259 वाहन जब्त किये गए !

- 803 किलो गाँजा जब्त, 120 ग्राम स्मैक, 260 ग्राम हीरोइन, 203 ग्राम ब्राउन सुगर, 752 ग्राम अफीम, 138 किलोग्राम अफीम का पौधा, 498 ग्राम मस्कलिन इत्यादि।

- सूखे नशे के कुल 67 काण्ड दर्ज, 163 लोग गिरफ्तार।

-महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचार में 20।93% की कमी आई।

-गृहभेदन, साधारण दंगा, फिरौती हेतू अपहरण, अनु जाति/जनजाति के प्रति अपराध तथा साम्प्रदायिक दंगे के कांडों में कमी आई है! इनके अलावा अन्य आंकड़ों में भी सुधार साफ दिखाई देने लगा है।

किशनगंज पुलिस की अपील

जिस तरह हमारे देश मे युवाओं का नशे की तरफ रुझान बढ़ रहा है, वह वाकई गंभीर चिंता का विषय है।वह युवा जिसे हम अपने देश की शक्ति मानते है जिसे हम भारत देश का भविष्य मानते है,उसे नशे की कीड़े ने ऐसा जकड़ लिया है की जैसे शिकारी अपने शिकार को जकडता है,ओर नशा का कीड़ा ऐसा होता है की जो व्यक्ति की मौत के बाद ही उसे छोड़ता है।वही किशनगंज पुलिस का कहना है की अगर कोई भी व्यक्ति "पूर्ण नशा बंदी" में पुलिस का सहयोग करता है तो उन्हें समुचित रूप से एसपी किशनगंज द्वारा पुरस्कृत भी किया जाएगा।

आइये, हम सब बिहार सरकार के इस महाभियान जो समाज की दिशा और दशा दोनों बदल सकता है, इसके अक्षरशः अनुपालन अपना अपना महती सहयोग करें, अपने बच्चों, देश-राज्य के भविष्य को नशे के चंगुल से बचाएं, एक सुदृढ़ और सरंक्षित भारतराष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान करें।

भाई-बहन का रिश्ता बनाता है मायका इसलिए समझें रिश्तों की अहमियत!

पता चला कि राजीव को कैंसर है। फिर देखते ही देखते 8 महीनों में उस की मृत्यु हो गई। यों अचानक अपनी गृहस्थी पर गिरे पहाड़ को अकेली शर्मिला कैसे उठा पाती? उस के दोनों भाइयों ने उसे संभालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यहां तक कि एक भाई के एक मित्र ने शर्मिला की नन्ही बच्ची सहित उसे अपनी जिंदगी में शामिल कर लिया।

शर्मिला की मां उस की डोलती नैया को संभालने का श्रेय उस के भाइयों को देते नहीं थकती हैं, ह्यह्यअगर मैं अकेली होती तो रोधो कर अपनी और शर्मिला की जिंदगी बिताने पर मजबूर होती, पर इस के भाइयों ने इस का जीवन संवार दिया।

सोचिए, यदि शर्मिला का कोई भाईबहन न होता सिर्फ मातापिता होते, फिर चाहे घर में सब सुखसुविधाएं होतीं, किंतु क्या वे हंसीसुखी अपना शेष जीवन व्यतीत कर पाते? नहीं। एक पीड़ा सालती रहती, एक कमी खलती रहती। केवल भौतिक सुविधाओं से ही जीवन संपूर्ण नहीं होता, उसे पूरा करते हैं रिश्ते।

सूनेसूने मायके का दर्द: सावित्री जैन रोज की तरह शाम को पार्क में बैठी थीं कि रमा भी सैर करने आ गईं। अपने व्हाट्सऐप पर आए एक चुटकुले को सभी को सुनाते हुए वे मजाक करने लगीं, कब जा रही हैं सब अपनेअपने मायके?

सभी खिलखिलाने लगीं पर सावित्री मायूसी भरे सुर में बोलीं, ह्यह्यकाहे का मायका? जब तक मातापिता थे, तब तक मायका भी था। कोई भाई भाभी होते तो आज भी एक ठौरठिकाना रहता मायके का।

वाकई, एकलौती संतान का मायका भी तभी तक होता है जब तक मातापिता इस दुनिया में होते हैं। उन के बाद कोई दूसरा घर नहीं होता मायके के नाम पर।

भाईभाभी से झगड़ा:

ह्यह्यसावित्रीजी, आप को इस बात का अफसोस है कि आप के पास भाईभाभी नहीं हैं और मुझे देखो मैं ने अनर्गल बातों में आ कर अपने भैयाभाभी से झगड़ा मोल ले लिया। मायका होते हुए भी मैं ने उस के दरवाजे अपने लिए स्वयं बंद कर लिए, श्रेया ने भी अपना दुख बांटते हुए कहा।

ठीक ही तो है। यदि झगड़ा हो तो रिश्ते बोझ बन जाते हैं और हम उन्हें बस ढोते रह जाते हैं। उन की मिठास तो खत्म हो गई होती है। जहां दो बरतन होते हैं, वहां उन का टकराना स्वाभाविक है, परंतु इन बातों का कितना असर रिश्तों पर पड़ने देना चाहिए, इस बात का निर्णय आप स्वयं करें।

भाईबहन का साथ

भाई बहन का रिश्ता अनमोल होता है। दोनों एकदूसरे को भावनात्मक संबल देते हैं, दुनिया के सामने एकदूसरे का साथ देते हैं। खुद भले ही एकदूसरे की कमियां निकाल कर चिढ़ाते रहें लेकिन किसी और के बीच में बोलते ही फौरन तरफदारी पर उतर आते हैं।

कभी एकदूसरे को मझधार में नहीं छोड़ते हैं। भाईबहन के झगड़े भी प्यार के झगड़े होते हैं, अधिकार की भावना के साथ होते हैं। जिस घरपरिवार में भाईबहन होते हैं, वहां त्योहार मनते रहते हैं, फिर चाहे होली हो, रक्षाबंधन या फिर ईद।

मां के बाद भाभी

शादी के 25 वर्षों बाद भी जब मंजू अपने मायके से लौटती हैं तो एक नई स्फूर्ति के साथ। वे कहती हैं, ह्यह्यमेरे दोनों भैयाभाभी मुझे पलकों पर बैठाते हैं। उन्हें देख कर मैं अपने बेटे को भी यही संस्कार देती हूं कि सारी उम्र बहन का यों ही सत्कार करना। आखिर, बेटियों का मायका भैयाभाभी से ही होता है न कि लेनदेन, उपहारों से। पैसे की कमी किसे है, पर प्यार हर कोई चाहता है।

दूसरी तरफ मंजू की बड़ी भाभी कुसुम कहती हैं, ह्यह्यशादी के बाद जब मैं विदा हुई तो मेरी मां ने मुझे यह बहुत अच्छी सीख दी थी कि शादीशुदा ननदें अपने मायके के बचपन की यादों को समेटने आती हैं। जिस घरआंगन में पलीबढ़ीं, वहां से कुछ लेने नहीं आती हैं, अपितु अपना बचपन दोहराने आती हैं। कितना अच्छा लगता है जब भाईबहन संग बैठ कर बचपन की यादों पर खिलखिलाते हैं।

मातापिता के अकेलेपन की चिंता:

नौकरीपेशा सीमा की बेटी विश्वविद्यालय की पढ़ाई हेतु दूसरे शहर चली गई। सीमा कई दिनों तक अकेलेपन के कारण अवसाद में घिरी रहीं। वे कहती हैं, ह्यह्यकाश, मेरे एक बच्चा और होता तो यों अचानक मैं अकेली न हो जाती। पहले एक संतान जाती, फिर मैं अपने को धीरेधीरे स्थिति अनुसार ढाल लेती। दूसरे के जाने पर मुझे इतनी पीड़ा नहीं होती। एकसाथ मेरा घर खाली नहीं हो जाता।

एकलौती बेटी को शादी के बाद अपने मातापिता की चिंता रहना स्वाभाविक है। जहां भाई मातापिता के साथ रहता हो, वहां इस चिंता का लेशमात्र भी बहन को नहीं छू सकता। वैसे आज के जमाने में नौकरी के कारण कम ही लड़के अपने मातापिता के साथ रह पाते हैं। किंतु अगर भाई दूर रहता है, तो भी जरूरत पर पहुंचेगा अवश्य। बहन भी पहुंचेगी परंतु मानसिक स्तर पर थोड़ी फ्री रहेगी और अपनी गृहस्थी देखते हुए आ पाएगी।

पति या ससुराल में विवाद:

सोनम की शादी के कुछ माह बाद ही पतिपत्नी में सासससुर को ले कर झगड़े शुरू हो गए। सोनम नौकरीपेशा थी और घर की पूरी जिम्मेदारी भी संभालना उसे कठिन लग रहा था। किंतु ससुराल का वातावरण ऐसा था कि गिरीश उस की जरा भी सहायता करता तो मातापिता के ताने सुनता। इसी डर से वह सोनम की कोई मदद नहीं करता।

मायके आते ही भाई ने सोनम की हंसी के पीछे छिपी परेशानी भांप ली। बहुत सोचविचार कर उस ने गिरीश से बात करने का निर्णय किया। दोनों घर से बाहर मिले, दिल की बातें कहीं और एक सार्थक निर्णय पर पहुंच गए। जरा सी हिम्मत दिखा कर गिरीश ने मातापिता को समझा दिया कि नौकरीपेशा बहू से पुरातन समय की अपेक्षाएं रखना अन्याय है। उस की मदद करने से घर का काम भी आसानी से होता रहेगा और माहौल भी सकारात्मक रहेगा।

पुणे विश्वविद्यालय के एक कालेज की निदेशक डा। सारिका शर्मा कहती हैं, मुझे विश्वास है कि यदि जीवन में किसी उलझन का सामना करना पड़ा तो मेरा भाई वह पहला इंसान होगा जिसे मैं अपनी परेशानी बताऊंगी। वैसे तो मायके में मांबाप भी हैं, लेकिन उन की उम्र में उन्हें परेशान करना ठीक नहीं। फिर उन की पीढ़ी आज की समस्याएं नहीं समझ सकती। भाई या भाभी आसानी से मेरी बात समझते हैं।

भाईभाभी से कैसे निभा कर रखें:

भाईबहन का रिश्ता अनमोल होता है। उसे निभाने का प्रयास सारी उम्र किया जाना चाहिए। भाभी के आने के बाद स्थिति थोड़ी बदल जाती है। मगर दोनों चाहें तो इस रिश्ते में कभी खटास न आए।

सारिका कितनी अच्छी सीख देती हैं, ह्यह्यभाईभाभी चाहे छोटे हों, उन्हें प्यार देने व इज्जत देने से ही रिश्ते की प्रगाढ़ता बनी रहती है नाकि पिछले जमाने की ननदों वाले नखरे दिखाने से। मैं साल भर अपनी भाभी की पसंद की छोटीबड़ी चीजें जमा करती हूं और मिलने पर उन्हें प्रेम से देती हूं। मायके में तनावमुक्त माहौल बनाए रखना एक बेटी की भी जिम्मेदारी है। मायके जाने पर मिलजुल कर घर के काम करने से मेहमानों का आना भाभी को अखरता नहीं और प्यार भी बना रहता है।

ये आसान सी बातें इस रिश्ते की प्रगाढ़ता बनाए रखेंगी:

झ भैयाभाभी या अपनी मां और भाभी के बीच में न बोलिए। पतिपत्नी और सासबहू का रिश्ता घरेलू होता है और शादी के बाद बहन दूसरे घर की हो जाती है। उन्हें आपस में तालमेल बैठाने दें। हो सकता है जो बात आप को अखर रही हो, वह उन्हें इतनी न अखर रही हो।

यदि मायके में कोई छोटामोटा झगड़ा या मनमुटाव हो गया है तब भी जब तक आप से बीचबचाव करने को न कहा जाए, आप बीच में न बोलें। आप का रिश्ता अपनी जगह है, आप उसे ही बनाए रखें।

यदि आप को बीच में बोलना ही पड़े तो मधुरता से कहें। जब आप की राय मांगी जाए या फिर कोई रिश्ता टूटने के कगार पर हो, तो शांति व धैर्य के सथ जो गलत लगे उसे समझाएं।

आप का अपने मायके की घरेलू बातों से बाहर रहना ही उचित है। किस ने चाय बनाई, किस ने गीले कपड़े सुखाए, ऐसी छोटीछोटी बातों में अपनी राय देने से ही अनर्गल खटपट होने की शुरूआत हो जाती है।

जब तक आप से किसी सिलसिले में राय न मांगी जाए, न दें। उन्हें कहां खर्चना है, कहां घूमने जाना है, ऐसे निर्णय उन्हें स्वयं लेने दें।

न अपनी मां से भाभी की और न ही भाभी से मां की चुगली सुनें। साफ कह दें कि मेरे लिए दोनों रिश्ते अनमोल हैं। मैं बीच में नहीं बोल सकती। यह आप दोनों सासबहू आपस में निबटा लें।

आप चाहे छोटी बहन हों या बड़ी, भतीजोंभतीजियों हेतु उपहार अवश्य ले जाएं। जरूरी नहीं कि महंगे उपहार ही ले जाएं। अपनी सामर्थ्यनुसार उन के लिए कुछ उपयोगी वस्तु या कुछ ऐसा जो उन की उम्र के बच्चों को भाए, ले जाएं।

जितिन प्रसादः माहिर या मौकापरस्त

शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश के जितिन प्रसाद का कांग्रेस छोड़ कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल होना यकीनन कांग्रेस के लिए एक झटका है। इस बात में कोई दोराय नहीं है, लेकिन यह प्रचारित करना कि कांग्रेस में उन की अनदेखी हो रही थी, समझ से परे है।

जितिन प्रसाद कांग्रेस के दिग्गज नेता रहे शाहजहांपुर के जितेंद्र प्रसाद उर्फ 'बाबा साहब' के बेटे और ज्योति प्रसाद जैसी शख्सीयत के पोते हैं।

जितिन प्रसाद साल 2004 में शाहजहांपुर क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव जीते थे और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार में उन्हें इस्पात मंत्री का कार्यभार भी सौंपा गया था। साल 2009 में लखीमपुर की धौरहरा लोकसभा सीट से जितिन प्रसाद को उम्मीदवार बनाया गया था और उन्होंने फिर से जीत दर्ज की थी। तब उन्हें पैट्रोलियम व प्राकृतिक गैस, सड़क परिवहन और राजमार्ग व मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री बनाया गया था।

साल 2014 के लोकसभा चुनाव में जितिन प्रसाद धौरहरा क्षेत्र से हार गए थे। लिहाजा, साल 2017 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने लखीमपुर के मोहम्मदी विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनना चाहा था, लेकिन बरबर नगर पंचायत के चेयरमैन संजय शर्मा को यहां से उम्मीदवार बनाया जा चुका था।

संजय शर्मा मोहम्मदी क्षेत्र के कांग्रेस विधायक और नगर पंचायत बरबर के चेयरमैन रहते आए राम भजन शर्मा के बेटे थे। संजय शर्मा की उम्मीदवारी घोषित होने के बाद ही जितिन प्रसाद ने बगावत का झंडा उठाया था और भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के लिए काफिले समेत लखनऊ शाहजहांपुर मार्ग पर महोली तक पहुंच भी गए थे, पर कहा जाता है कि महोली पहुंचते ही प्रियंका गांधी वाड्रा ने उन से फोन पर बात की और वे वापस लौट आए थे।

वापसी पर जितिन प्रसाद को उन के गृह जनपद या यों कहें बाबा साहब के गढ़ जनपद शाहजहांपुर के निकट तिलहर विधानसभा से कांग्रेस का उम्मीदवार घोषित किया गया था। गृह जनपद और प्रभावशाली नेतृत्व के वजूद के साथ 2-2 बार केंद्र में मंत्रिमंडल में सम्मिलित रहने वाले जितिन प्रसाद विधानसभा चुनाव में बुरी तरह से हारे थे। इस हार को वैसे तो भाजपा की लहर में डूबने की हालत मानी जाती है, लेकिन जितिन प्रसाद जैसे नेता के लिए अपने गढ़ में ही बुरी तरह हारना बहुत ही शर्मनाक बात कही जा सकती है।

साल 2019 में भी जितिन प्रसाद को लोकसभा धौरहरा से उम्मीदवार बनाया गया था, लेकिन उस में भी उन का स्थान सम्मानजनक तक नहीं रहा था।

कुछ भी हो, जितिन प्रसाद के पार्टी छोड़ने व भाजपा में सम्मिलित होने को कांग्रेस के लिए अच्छा नहीं माना जा सकता, लेकिन जिस तौरतरीके के लिए कांग्रेस की लानतमलामत की जा रही है, वह कांग्रेस पर लागू नहीं होता।

साल 2004 में शाहजहांपुर से व साल 2009 में धौरहरा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार के तौर पर जीतना जितिन प्रसाद का कोई करिश्मा भी नहीं माना जा सकता। करिश्मा तो तब माना जाता, जब वे साल 2017 में अपने गृह जनपद के तिलहर विधानसभा क्षेत्र से ही विधायक बन कर दिखाते।

साल 2014 और साल 2019 के लोकसभा चुनाव में भी जितिन प्रसाद को धौरहरा से उम्मीदवार बनाया गया था और उन का हार जाना कोई अप्रत्याशित नहीं माना जा सकता, लेकिन तिलहर विधानसभा चुनाव में हार जाना जितिन प्रसाद की कदकाठी के मुताबिक नहीं था। साल 2014 व 2019 के लोकसभा चुनाव या 2017 के विधानसभा चुनाव में तो कांग्रेस भी हारी थी, कांग्रेस की झोली में तब क्या था?

युवा जितिन प्रसाद जैसा महान नेता, जो 2 बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में रहा हो, अपने गढ़ तिलहर से हार कर निचली पायदान पर पहुंचा हो, उसे कांग्रेस दे ही क्या सकती थी? भले ही कांग्रेस की गलतियां रही होंगी, लेकिन कांग्रेस कर भी क्या सकती थी, उस इनसान के लिए, जिस के सिर पर 2004 व 2009 में केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह दे कर मंत्री पद का ताज रखा गया और वह मोहम्मदी क्षेत्र से विधानसभा टिकट संजय शर्मा को मिल जाने के गम में कांग्रेस छोड़ कर साल 2017 में ही भाजपा में जाने के लिए धूमधाम से घोषणा कर के पलायन कर रहा था।

निश्चित ब्राह्मण होने के नाते जितिन प्रसाद को पार्टी में अहम जगह दी जा सकती थी, लेकिन प्रमोद तिवारी वगैरह जैसे कई ब्राह्मण नेताओं ने भले ही केंद्र में मंत्रिमंडल में जगह न पाई हो, लेकिन उन की हालत व जन महत्त्व तो इसी से साबित होता है कि वे लगातार 7 बार अपने क्षेत्र से विधायक चुने जाते रहे और खुद राज्यसभा सदस्य बन जाने के बाद जब साल 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के 7 विधायक ही जीत सके थे, तब भी प्रमोद तिवारी की बेटी मोना उस चुनाव में विधायक बन कर विधानसभा में नेता कांग्रेस हैं।

भले ही अजय कुमार लल्लू को विधानसभा में कांग्रेस के नेता पद से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नियुक्त कर दिया हो, यह पार्टीगत नीति और सोच रही हो, लेकिन 2 बार कांग्रेस सांसद रह कर केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह पाने के बाद भी विधानसभा चुनाव हार जाने वाले नेता जितिन प्रसाद को क्या अहमियत दी जा सकती थी, सम झ से परे है। उन्हें ब्राह्मणों को प्रदेश में एकत्र करने, संगठित करने की जिम्मेदारी दी गई, लेकिन क्या हो सका है अभी तक वे क्या कर सके?

यह तय है कि 2 बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में रहने वाला आदमी बड़ा नेता होना चाहिए, बड़ी जिम्मेदारी मिलनी चाहिए, लेकिन कौन सी सीट पर विधानसभा में कौन सी जिम्मेदारी दे दी जाती, विधानपरिषद या राज्यसभा में किस क्षेत्र से भेजा जा सकता था और कांग्रेस की औकात भी थी भेजने की? और यह औकात तो तब बनती, जब ऐसे लोग अपनेअपने गृह क्षेत्र तक से विधानसभा चुनाव जीतने की हैसियत में होते।

कांग्रेस की वर्तमान हालत न तो सोनिया गांधी की वजह से है और न ही इस के लिए राहुल गांधी जिम्मेदार हैं। आखिर एक आदमी कितने दिनों तक अकेले रेत में खड़ी नाव पर सवार जोर लगा कर हईशा भी नहीं कह सकते, चिल्लाना नहीं चाहते, तो न तो नाव रेत से निकलेगी और न ही नदी के उस पार जा पाएगी। एक अकेला कब तक मुरदा लाशों को ढो कर उन के सिर पर ताज पहनाने का काम करता रह सकता है। यही वजह है कि राहुल गांधी अपने साथियों से हताशनिराश हो कर नाव की पतवार संभालने की इच्छा ही नहीं रख पा रहे हैं।

राहुल सक्रिय नहीं हैं का जुमला उछालने वाले कितने सक्रिय हैं, यह उन्हें खुद सोचना चाहिए और नाव की सवारी कर रहे जोर लगा कर हईशा तक न कर पाने वाले स्वार्थ के लिए उस दल को छोड़ कर भागे, जिस ने उन को राजनीति में आने के साथ ही 2 बार सांसद ही नहीं, बल्कि केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने का सुख दिया, केवल मोहम्मदी विधानसभा क्षेत्र से किसी दूसरे को उम्मीदवार बना देने के चलते जिस ने अपना काफिला भाजपा की ओर बढ़ा दिया और तिलहर से टिकट दिए जाने के बावजूद बुरी तरह से हारा। अच्छा है कि अब जितिन प्रसाद भाजपा में करिश्मा दिखाएं, लेकिन जलती आग तापने वाले अपनी भी गतिविधियों का आकलन करते तो अच्छा होता।

राज कुंद्रा पर सॉफ्ट पॉर्न मेकर

मुंबई पुलिस ने फरवरी महीने में ही इस मामले में केस दर्ज किया था और अब आकर राज कुंद्रा की गिरफ्तारी की गई है। क्राइम ब्रांच की एफआईआर के मुताबिक राज कुंद्रा ही इस मामले में मुख्य साजिशकर्ता हैं। बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी के पति और बिजनेसमैन राज कुंद्रा को मुंबई पुलिस ने सॉफ्ट पॉर्नोग्राफी फिल्म बनाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। राज कुंद्रा पर सॉफ्ट पॉर्न फिल्में बनाने के अलावा बनाकर ऐप पर अपलोड करने का आरोप है। आज मुंबई पुलिस राज कुंद्रा को कोर्ट में पेश करेगी। पुलिस का दावा है कि उनके पास राज कुंद्रा के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। पुलिस ने वीडियो अपलोड करने वाले उमेश कामथ को भी गिरफ्तार कर लिया है।

मामले में मुख्य साजिशकर्ता हैं राज कुंद्रा

फरवरी 2021 में क्राइम ब्रांच ने मुंबई में सॉफ्ट पॉर्नोग्राफी फिल्में बनाने और कुछ ऐप्स के जरिए उन्हें पब्लिश करने का मामला दर्ज किया गया था। जिसकी जांच में राज कुंद्रा का नाम सामने आया था। कुंद्रा पर अश्लील फिल्में बनाने और उन्हें कुछ ऐप्स पर दिखाने का आरोप है। क्राइम ब्रांच की एफआईआर के मुताबिक

राज कुंद्रा ही इस मामले में मुख्य साजिशकर्ता हैं। पुलिस ने फरवरी महीने में ही इस मामले में केस दर्ज किया था और अब आकर राज कुंद्रा की गिरफ्तारी की गई है। देर रात पुलिस ने उनका मेडिकल करवाया और आज ही उन्हें कोर्ट में पेश किया जा सकता है।

शर्लिन चोपड़ा ने लिया था राज कुंद्रा का नाम

मुंबई पुलिस ने इसी साल फरवरी में सॉफ्ट पॉर्नोग्राफी से जुड़ी फिल्में बनाने और उन्हें अपलोड करने का मामला दर्ज किया था। 26 मार्च को मुंबई पुलिस ने इसी मामले में एकता कपूर का भी स्टेटमेंट लिया था। महाराष्ट्र साइबर सेल ने शर्लिन चोपड़ा और पूनम पांडे का स्टेटमेंट पहले ही दर्ज कर लिया है। राज कुंद्रा के खिलाफ इसी साल फरवरी महीने में केस दर्ज किया गया और अब क्राइम ब्रांच की टीम ने उन्हें गिरफ्तार किया है। राज कुंद्रा के खिलाफ आईटी एक्ट और आईपीसी की धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस के मुताबिक राज कुंद्रा के खिलाफ पक्के सबूत हैं। ऋक्षफ्रके मुताबिक इस मामले में राज कुंद्रा का नाम पुलिस के सामने शर्लिन चोपड़ा ने लिया था।

एक प्रोजेक्ट के लिए मिलते थे 30 लाख रुपये

पुलिस के मुताबिक शर्लिन चोपड़ा का कहना है कि उन्हें एडल्ट इंडस्ट्री में लाने वाले राज कुंद्रा ही हैं। हर प्रोजेक्ट के लिए शर्लिन चोपड़ा को 30 लाख रुपये की पेमेंट मिलती थी। शर्लिन के मुताबिक उन्होंने इस तरह के 15 से 20 प्रोजेक्ट किए हैं।

लंदन से अपलोड की जाती थीं फिल्में

अब फिल्मों को अपलोड कहां से और कौन करता था इस पर भी पुलिस को नई जानकारी मिली है। पुलिस के मुताबिक फिल्में देश से नहीं, बल्कि विदेश से अपलोड की जाती थीं और इन्हें राज कुंद्रा का एक नजदीकी ही अपलोड करता था। पुलिस की अबतक की जांच के मुताबिक सॉफ्ट पोर्नोग्राफी से जुड़ी फिल्मों को लंदन से अपलोड किया जाता था और इस काम को उमेश कामथ नाम का शख्स अंजाम देता था।

कैसे हुआ सॉफ्ट पोर्नोग्राफी का खुलासा?

पुलिस के मुताबिक उमेश कामथ ने नए अभिनेता और अभिनेत्रियों पर फिल्माए गए वीडियो को भी एप्लीकेशन बेस वेबसाइट पर अपलोड किया था। पुलिस का ये भी कहना है कि अब तक 90 पोर्न वीडियो से ज्यादा शूट किए जा चुके हैं और उतने ही अपलोड भी किए गए हैं। सॉफ्ट पॉर्नोग्राफी का ये पूरा खेल पहली बार तब चर्चा में आया था, जब मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच ने अभिनेत्री गहना वशिष्ठ को हिरासत में लिया था। गहना वशिष्ठ की गिरफ्तारी के बाद से ही धीरे-धीरे इस मामले की परतें खुलनी शुरू हुई थीं।

राज कुंद्रा के कस्टडी की मांग कर सकती है क्राइम ब्रांच

इस मामले में मुंबई क्राइम ब्रांच आज राज कुंद्रा को कोर्ट में पेश कर कस्टडी में लेने की मांग कर सकती है। ताकि मामले में और जानकारी हासिल की जा सके। देखना ये होगा कि मुख्य साजिशकर्ता के तौर पर राज कुंद्रा की गिरफ्तारी इस पूरे मामले की अंतिम कड़ी है या फिर इसके तार कहीं और भी जुड़ रहे हैं।

मलाड वेस्ट में होती थी अश्लील फिल्मों की शूटिंग

पुलिस की जांच में ये भी पता चला है कि इस पोर्नोग्राफी रैकेट को चलाने के लिए मुंबई में मलाड वेस्ट के मढगांव में एक बंगला किराए पर लिया गया था, जहां अश्लील फिल्मों की शूटिंग चलती थी। यहां तक कि जब पुलिस ने यहां छापा मारा, तब भी अश्लील फिल्मों की शूटिंग चल रही थी। इन अश्लील फिल्मों और वीडियो को एक नहीं कई साइट्स पर अपलोड किया जाता था और पैसे कमाए जाते थे।

पूछताछ के बाद हुई राज कुंद्रा की गिरफ्तारी

19 जुलाई यानी कल क्राइम ब्रांच ने राज कुंद्रा को पूछताछ के लिए बुलाया था। रात 9 बजे राज कुंद्रा मुंबई क्राइम ब्रांच के भायकला दफ्तर पहुंचे। करीब 2 घंटे तक पूछताछ चली और इसके बाद रात 11 बजे राज कुंद्रा को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर सुबह 4 बजे मेडिकल जांच के लिए जेजे अस्पताल और वहां से सुबह सवा 4 बजे मुंबई पुलिस कमिश्नर के दफ्तर ले जाया गया। अब संभावना है कि सुबह 11 बजे कोर्ट में पेश किया जाएगा।

सावन के महीने में इन आसान से उपायों से प्रसन्न हो जाएंगे शिवजी

संक्रांति की गणना के अनुसार सावन का महीना 16 जुलाई से शुरू हो गया है। सावन का नाम आते ही मन में रिमझिम बौछारों के साथ ही भगवान शिव की छवि उभरकर आती है। साथ ही विचार आते हैं कि हम ऐसा क्या करें कि भगवान शिव प्रसन्न हो जाएं और हम पर कृपा बरसाएं। आइए, आज जानते हैं शिवजी को प्रसन्न करने के कुछ आसान से उपाय।

शीघ्र विवाह के लिए

कुंवारी कन्याएं शीघ्र विवाह के लिए सावन के महीने में दूध में केसर मिलाकर रोज शिवलिंग पर चढ़ाएं।

ऐसे आएगी सुख और समृद्धि

सावन में नंदी बाबा को रोज हरा चारा खिलाएं। भगवान शिव निश्चित आप पर प्रसन्न होंगे और आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी। काले तिल चढ़ाएं भोले बाबा को रोज सुबह स्नान करने के पश्चात मंदिर जाएं और यहां शिवलिंग पर जलाभिषेक करने के बाद काले तिल से पूजा करें। ऐसा करने से भोले बाबा प्रसन्न होंगे।

संतान प्राप्ति के लिए

सावन के महीने के किसी भी सोमवार को स्नान के पश्चात गेहूं के आटे से 11 शिवलिंग बनाएं। प्रत्येक शिवलिंग पर 11 बार जल चढ़ाएं। ऐसा करते समय शिव स्त्रोत का जप करते रहें। बचा हुआ जल प्रसाद के रूप में खुद ग्रहण करें। ऐसा करने से संतान सुख से वंचित लोगों को मंगलकारी परिणाम प्राप्त होने लगते हैं।

रोग दूर करने के लिए

सावन में सोमवार को पानी में दूध और काले तिल डालकर भगवान शिव का अभिषेक करने से शारीरिक बीमारियां दूर होती हैं।

आखिर क्यूँ है हिन्दू धर्म में श्रावण माह का अधिक धार्मिक महत्व?!

हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र माह से प्रारंभ होने वाले वर्ष का पांचवा महीना जो ईस्वी कलेंडर के जुलाई या अगस्त माह में पड़ता है, श्रावण माह कहलाता है। इसे वर्षा ऋतु का महीना भी कहा जाता है क्यों कि इस समय भारत में काफी वर्षा होती है। सावन का महीना रिमझिम फुहारों और हरियाली से मन को आनंदित कर देता है। भारत में इसी महीने की पूर्णिमा को मनाया जाता है रक्षाबंधन के त्योहार के रूप में..

श्रावण पूर्णिमा को दक्षिण भारत में नारयली पूर्णिमा व अवनी अवित्तम, मध्य भारत में कजरी पूनम, उत्तर भारत में रक्षा बंधन और गुजरात में पवित्रोपना के रूप में मनाया जाता है। हमारे त्योहारों की यही विविधता ही तो भारत की विशिष्टता की पहचान है।

सावन के महीने का महत्त्व

श्रावण यह हिंदी कैलेंडर में पांचवे स्थान पर आता हैं। यह वर्षा ऋतू में प्रारंभ होता है। शिव जिनको श्रावण का देवता कहा जाता हैं उन्हें इस माह में भिन्न-भिन्न तरीकों से पूजा जाता हैं। पुरे माह धार्मिक उत्सव होते हैं शिव उपासना, व्रत, पवित्र नदियों में स्नान एवम शिव अभिषेक का महत्व हैं। विशेष तौर पर सावन सोमवार को पूजा जाता हैं। कई महिलायें पूरा सावन महीना सूर्योदय के पूर्व स्नान कर उपवास रखती हैं। कुवारी कन्या अच्छे वर के लिए इस माह में उपवास एवम शिव की पूजा करती हैं। विवाहित स्त्री पति के लिए मंगल कामना करती हैं। भारत देश में पुरे उत्साह के साथ सावन महोत्सव मनाया जाता हैं।

स्वतंत्रता दिवस का महत्व

भारत का स्वतंत्रता दिवस प्रतिवर्ष 15 अगस्त के दिन भारत में स्वतंत्रता दिवसके रूप में बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। 15 अगस्त का त्यौहार सभी भारतियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह भारत का राष्टीय पर्व है।

200 साल तक ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी के पश्चात आज के ही दिन 15 अगस्त 1947 को भारत देश आजाद हुआ था। इस दिन भारत के प्रधानमंत्री दिल्ली के लाल किले में प्रतिवर्ष ध्वजारोहण करते है। हालाँकि ब्रिटिश साम्राज्य से भारत को आजादी दिलाना बहुत कठिन था; लेकिन भारत में कई ऐसे महान लोग और स्वतंत्रता सेनानियों थे जिसके कारण असम्भव कार्य संभव हो पाया।

उन्होंने न अपना सुख देखा न आराम, बस भारत देश और भावी पीढ़ी को आजादी दिलाने के लिए अपना पूरा जीवन बलिदान कर दिया।

काफी सारे आन्दोलन करने और बलिदान देने के बाद 15 अगस्त, 1947 को भारत देश आजाद हुआ। आजादी के बाद ही पाकिस्तान अलग बँट गया जो कि हिंसात्मक दंगों को साथ लाया था।

सर्वप्रथम भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु के द्वारा 15 अगस्त, 1947 को लाल किले के लाहौरी गेट के ऊपर भारत का तिरंगा (राष्ट्रीय ध्वज) फेहराया गया था।

भारत के राट्रीय ध्वज की भी अपनी एक खास विशेषता है भारत का तिरंगा तीन रंगों की पट्टियों से मिलकर बना हुआ है हर रंग का अपना-अपना एक विशेष महत्व है।

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की जो सबसे उपरी पट्टी है वो केसरिया रंग की है जोकि भारत देश की शक्ति और साहस को प्रदर्शित करता है।

ध्वज के बीच में सफेद रंग है जो शांति और सत्य को दशार्ता है। आखिरी सबसे नीचे हरा रंग है जो वृधि और भूमि की पवित्रता को संबोधित करता है।

बीच में सफेद रंग के ऊपर एक अशोक चक्र है जिसको विधि का चक्र भी कहते हैं जो सारनाथ के शेर के स्तम्भ से लिया गया है, जिसका निर्माण अशोक ने करवाया था। इसमें 24 तीलिया है जो नीले रंग की है।

राष्टीय गान : जनगणमन-अधिनायक जय हे भारतभाग्यविधाता

1757 ई। की प्लासी की लड़ाई और 1764 ई। का बक्सर का युद्ध भारतीयों द्वारा हार जाने के बाद अंग्रेजो ने बंगाल पर ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा अपने शासन शिकंजा कसा। अपने शासन को और मजबूत करने के लिए अंग्रेजो ने कई नियम (एक्ट) बनाये। भारतीयों द्वारा 1857 ई। में महान क्रांति की शुरूआत हुई इसकी शुरूआत 10 मई 1857 ई। में मेरठ से हुई। माना जाता है की 1857 का जो विद्रोह था वो बहुत बड़ा विद्रोह था।

1858 ई। में भारत का शासन कंपनी के हाथो से छिनकर ब्रिटिश क्राउन अर्थात ब्रिटेन की राजशाही के

हाथो सोप दिया गया था। इसके अतिरिक्त महात्मा गाँधी द्वारा अहिंसक आन्दोलन (सविनय अवज्ञान्दोलन) की शुरूआत भी हुई थी।

इसी बीच भारतीय जनता धीरे-धीरे अपना विकास कर रहे थे और इसके परिणामस्वरूप 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी (आई० एन० सी०) का निर्माण हुआ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा 1929 को पूर्ण स्वराज की घोषणा की गई। 1947 में प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने यह घोषणा की कि 1948 में ब्रिटिश सरकार भारत को पूर्ण स्वतंत्रता का अधिकार सोपेगी।

1947 ई। के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के अनुसार भारत को दो अधिराज्यो में बाटा गया (भारत तथा पाकिस्तान)। देश को बाँटने के बाद महात्मा गाँधी की मदद से भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु बने। भारत देश की स्वतंत्रता के लिए अनैको वीरो ने देश के प्रति अपना बलिदान दिया। महात्मा गाँधी जैसे कई भारतीय देशभक्तों के नेतृत्व में लोगो ने अहिंसक प्रतिरोध और आन्दोलनों में बड चढ़ कर हिस्सा लिया।

स्वतंत्रता के बाद भारत को दो भागो में बट गया जिससे भारत तथा पाकिस्तान नामक दो नए देशो का उदय हुआ। भारत विभाजन के बाद अनेक दंगे, हिंसा और अनेक प्रकार की बहुत सारी घटनाये हुई जिससे बड़ी संख्या में लोगो का विस्थापन हुआ।

अधिक मात्रा में जितने भी मुस्लिम धर्म के लोग थे वे पाकिस्तान चले गये और जितने भी हिन्दू एवम् सिख धर्म के लोग थे वह भारत आ गये।

भारत का स्वतंत्रता दिवस के प्रमुख वचन तथा नारे

भारत का स्वतंत्रता दिवस का अपना अलग ही एक खास महत्व होता है। भारत देश की स्वतंत्रता के लिए लाखो वीरो ने और अनेक क्रांतिकारीयो ने अपना सहयोग दिया। उनके कुछ नारे तथ वचन इस प्रकार है।

भारतीय देशभक्ति नारे और वचन

इन्कलाब जिंदाबाद / भगत सिंह
दिल्ली चलो / सुभास चन्द्र बोस
करो या मरो / महात्मा गाँधी
जय हिन्द / सुभास चन्द्र बोस
आराम हराम है / पंडित जवाहरलाल नेहरु
सारे जहा से अच्छा हिन्दुसता हमारा / इकबाल
साइमन कमीशन वापस जाओ / लाला लाजपत राय
भारत छोड़ो / महात्मा गाँधी
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा / सुभास चन्द्र बोस
सरफरोशी की तम्मना अब हमारे दिल में है / राम प्रसाद बिस्मिल
वन्दे मातरम / बकिमचंद्र चटर्जी
विजय विश्व तिरंगा प्यारा / श्याम लाल गुप्ता पार्षद
जन-गण-मन अधिनायक जय है / रविन्द्र नाथ ठाकुर
कर मत दो / सरदार वल्लभ भाई पटेल
जय जवान, जय किसान / लाल बहादुर शास्त्री
हे राम / महात्मा गाँधी
मारो फिरंगी को / मंगल पांडे

भारत का स्वतंत्रता दिवस का महत्व

भारत में 15 अगस्त के दिन स्वतंत्रता दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। स्वतंत्रता दिवस से एक दिन पहले ही देश के राष्ट्रपति द्वारा शाम के समय भाषण पेश किया जाता है।

अगले दिन भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दिल्ली के लाल किले पर ध्वजारोहण किया जाता है। साथ ही 21 तोपों की सलामी भी दी जाती है। फिर सभी लोग राष्ट्रगान गाते है। भारत के लोग स्वतंत्रता दिवस को बड़े ही हर्ष के साथ मानाते है और अपने देश के वीरो को याद करते है जिन्होंने भारत देश को आजाद कराने में अपने प्राणों की आहुति दी। स्वतंत्रता दिवस स्कूलों, कॉलेज और विभिन्न संस्थाओ में बड़े ही उत्साह के साथ मानते है। स्कूल में बच्चे अनेक प्रकार के संस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते है। 15 अगस्त के दिन पतंग उड़ाने का भी अपना ही एक अलग महत्व है भिन्न-भिन्न प्रकार और स्टाइलिश पतंगों से भारतीय आकाश भर जाता है इनमें से कुछ पतंगे तिरंगे के रंग की भी होती है जो भारतीय राष्टीय ध्वज को प्रदर्शित करती है। स्वतंत्रता दिवस को हम भारत की आजादी को याद करने के लिए मानते है तथा उन वीरो को याद करने के लिए मानते है जिन्होंने देश को आजाद कराने में अपना योगदान दिया।

कृष्ण जन्माष्टमी का इतिहास और व्रत की जरूरी बातें

कृष्णजन्माष्टमी, भगवान श्री कृष्ण जो कि विष्णु के आठवें अवतार थे, उनका जनमोत्सव है। योगेश्वर कृष्ण के भगवद्गीता के उपदेश अनादि काल से जनमानस के लिए जीवन दर्शन प्रस्तुत करते रहे हैं। जन्माष्टमी को भारत में हीं नहीं, बल्कि विदेशों में बसे भारतीय भी पूरी आस्था व उल्लास से मनाते हैं। श्रीकृष्ण ने अपना अवतार भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को अत्याचारी कंस का विनाश करने के लिए मथुरा में जन्म लिया। इसलिये भगवान स्वयं इस दिन पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। अत: इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं। इसीलिए श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के मौके पर मथुरा नगरी भक्ति के रंगों से सराबोर हो उठती है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन मौके पर भगवान कान्हा की मोहक छवि देखने के लिए दूर दूर से श्रद्धालु आज के दिन मथुरा पहुंचते हैं। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर मथुरा कृष्णमय हो जाता है। मंदिरों को खास तौर पर सजाया जाता है।

ज्न्माष्टमी में स्त्री-पुरुष बारह बजे तक व्रत रखते हैं। इस दिन मंदिरों में झांकियां सजाई जाती है और भगवान कृष्ण को झूला झुलाया जाता है। और रासलीला का भी आयोजन होता है।

कृष्ण जन्माष्टमी पर भक्त भव्य चांदनी चौक, दिल्ली (भारत) की खरीदारी, सड़कों पर कृष्णा झूला, श्री लड्डू गोपाल के लिए कपड़े और अपने प्रिय भगवान कृष्ण जी की प्रतिमा खरीदते हैं। सभी मंदिरों को खूबसूरती से सजाया जाता है और भक्त आधी रात तक इंतजार करते हैं, ताकि वे देख सकें कि उनके द्वारा बनाई गई खूबसूरत खरीद के साथ उनके बाल गोपाल कैसे दिखते हैं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन व्रत पूजन की विशेष महिमा है। इस दिन श्रीकृष्णजी के बाल स्वरूप कान्हा की पूजा का विधान है। कुछ स्थानों पर इसे कान्हाष्टमी या गोकुल अष्टमी भी कहा जाता है। इस दिन व्रत रखते हुए सामान्य नियम ही लागू होते हैं, लेकिन एक पाबंदी इस व्रत को पूरी तरह अलग करती है, यह पाबंदी पानी पीने को लेकर है। इस व्रत को रखने वालों को पूरे दिन पानी पीने की छूट होती है, लेकिन सूर्यास्त से लेकर कृष्ण जन्म के समय तक निर्जल रहना होता है।

स्नान ध्यान के साथ शुरू करें दिनचर्या

जन्माष्टमी पर सुबह जल्दी उठकर स्वच्छ पानी से स्नान कर दिन भर जलाहार या फलाहार ग्रहण करें और सात्विक रहें। शाम की पूजा से पहले फिर एक बार स्नान करना चाहिए। इस दिन व्रत रखते हुए मसालेदार या तैलीय खाने से गैस्ट्रिक या एसिडिटी की समस्या घेर सकती है। इसलिए दिन के समय बहुत सारा पानी पीना चाहिए।

फलों में जरूरी ये आहार

जन्माष्टमी व्रत में फल खाए जा सकते हैं, इसलिए रसीले फलों का भरपूर सेवन करें। तरबूज, ककड़ी और खरबूजे जैसे पानी वाले फलों का सेवन करें। इसके अलावा केला, सेब और अमरूद भी खाए जा सकते हैं।

व्रत संकल्प का तरीका

कुशा आसन पर श्रद्धालु को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए। हाथ जोड़कर सूर्य, सोम, यम, काल, संधि, भूत, पवन, दिक्पति, भूमि, आकाश, खेचर, अमर और ब्रह्मादि का कर हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, कुश और गंध लेकर व्रत उपवास का संकल्प करना चाहिए।

निलकोठी आज भी अंग्रेजों के क्रूरता का गवाह बना है

आमोद दुबे चांदन

चांदन प्रखंड के बिरनिया पंचायत अंतर्गत नील कोठी गांव का वह कोठी आज पूरी तरह जर्जर होता जा रहा है जो आज भी अंग्रेजों के क्रूरता की कहानी कहता है। इसी कोठी में अंग्रेज सिपाही रहा करते थे और स्थानीय किसानों को नील की पैदावार करने के लिए मजबूर करते थे ।इतना ही नहीं खुद भी नील का बीज लाकर किसानों को दिया जाता था। और उन पर अत्याचार करते हुए जबरन नील की खेती करने को कहा जाता था। साथ ही साथ नील की पैदावार को इसी कोठी में लाकर बेचना भी किसानों की मजबूरी होती थी। जिसे काफी कम मूल्य पर खरीदा जाता था ,जिससे किसानों का परिवार पालना भी कठिन हो जाता था।कोई दूसरा अनाज पैदा कर किसान आत्म निर्भर नही बन जाय इसलिए उससे जबरन सिर्फ नील की खेती के लिए मजबूर करते थे। इसका जब भी कोई किसान इसका विरोध करते थे उसे अंग्रेजों की क्रूरता का शिकार होना पड़ा था । इसी अत्याचार को समाप्त करने के लिए निलहे किसान आंदोलन को लेकर विनोबा भावे और महात्मा गांधी का भी आगमन हुआ था। और उन लोगों द्वारा ही किसानों को नील की खेती करने से रोकने का उपाय बताया गया था। जिसके आधार पर किसानों से अंग्रेज से मिली बीज को किसान आग पर गर्म कर उसे खेतों में लगाते थे जिससे उसका पौधा पैदा ही नहीं होता था। और लाचार होकर अंग्रेजों को इस खेती को बंद करना पड़ा। इतना ही नहीं अंग्रेजों द्वारा इसी कोठी में नील को जमा करने के बाद उसे इंग्लैंड भेजा जाता था। कुछ स्थानीय बुजुर्ग राधेकृष्ण वर्णवाल,उमाशंकर पांडेय,नकुल मिस्त्री बताते हैं कि इस

गांव में नील पैदा नहीं करने वाले किसानों के साथ काफी ज्यादती की जाती थी और उसे कोड़े की मार भी खानी पड़ती थी। और अंततः किसानों को विनोबा भावे और महात्मा गांधी की प्रेरणा से इस क्षेत्र अन्य स्वतंत्रता सेनानी के सहयोग से छुटकारा मिला। लेकिन यह कोठी आज भी जर्जर अवस्था में पड़ी हुई है। कुछ लोग इसका अतिक्रमण भी कर चुके हैं। लेकिन सरकार की ओर से आज तक इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

यादों को चमन में खिलने दीजिए

किसी की यादों को नदी की धार बना दीजिये..
धीरे धीरे बहते हुए सागर तक पहुंचा दीजिये..!!
जमे पानी का अभिशाप ना बनने दीजिए
सड़ान्ध उठने की हालत से बचा लीजिये!!

प्रेम को जीवित रखने का यह हुनर अपना लीजिये
खुद भी जीइये और उसको भी जीने दीजिये...!!!

फूल बनकर यादों को चमन में खिलने दीजिये...
आँखें बंद कर उसकी खुशबु को महसूस कीजिये...!!
शनैः शनैः उसे जीवन का आधार बना लीजिये...
कस्तूरी मृग सी अपने भीतर ही समा लीजिये..!!
और इस तरह प्यार की कशिश महसूस कीजिये
पर भूल कर भी जमाने की उसे आंच ना लगने दीजिये...!!

डॉ. प्रभा @ सर्वाधिकार सुरक्षित

लायंस क्लब गोड्डा के द्वारा सदर अस्पताल में रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

सिविल सर्जन डॉ. मंटु टेकरीवाल ,प्रभारी उपाधीक्षक डॉ प्रभा रानी प्रसाद, सहित अन्य लॉयन सदस्य कार्यक्रम में हुए शरीक

राजेश पंजिकर(ब्यूरो चीफ)

झारखंड राज्य के गोड्डा जिले में लायंस क्लब के द्वारा अनेक सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्य किए जाते रहे हैं .पिछले वर्ष कोरोना काल में देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था.उस समय भी लायंस क्लब गोड्डा के द्वारा सुदूर गांव में मुफ्त भोजनालय शिविर लगाकर असहाय और जरूरतमंदों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई थी जो किएक अनोखी और सराहनीय पहल थी .इस गतिविधि में डॉक्टर प्रभारानी प्रसाद और उनकी टीम के द्वारा भोजन की व्यवस्था कराई गई थी. कोरोना काल मेंडॉक्टर प्रभारानी प्रसाद ने योद्धा बन मानव सेवा का धर्म भी निभाया था .जिस कारण उन्हें आई एम ए प्रेसीडेंशियल अवॉर्ड से नवाजा गया था. बरहाल आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के पूर्व लायंस क्लब गोड्डा के सौजन्य से सदर अस्पताल गोड्डा के प्रांगण में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया. जिसमें सदर अस्पताल में 20 यूनिट विभिन्न लॉयन सदस्यों द्वारा रक्त दान किया गया. इस अवसर पर सिविल सर्जन लायन डॉ मंटु टेकरीवाल , सदरअस्पताल प्रभारी उपाधीक्षक लॉयन डॉ प्रभारानी प्रसाद एवं ब्लड बैंक प्रभारी लॉयन डॉ ताराशंकर झा के साथ-साथसभी लॉयन सदस्य उपस्थित थे .इस क्रम में सभी लायंस क्लब गोड्डाके सदस्यों के रूप में रक्तदान किया . इसके अलावा मानव जाति के हित में दिन-रात सेवारत मरीजों और ब्लड बैंक कर्मी और डॉक्टर को भी सम्मानित किया गया. लायंस क्लब गोड्डा के द्वारा निरंतर सामाजिक सरोकार से जुड़े अनेक कार्यों के करने से इस क्षेत्र के लोग अधिक से अधिक लाभान्वित हो रहे हैं.

नगर वासियों के सुविधा हेतु तत्पर है नगर परिषद

शहर की हर सड़कें रोशनी से होगा चकमक

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

21 फरवरी 1991 को बांका अपने जिला के अस्तित्व में आया था .तब से अब तक जिले में विभिन्न विकासात्मक कार्य हुए .साथ ही साथ नए कार्यालयों में नए नए पदों का भी सृजन हुआ और पदाधिकारी भी पदस्थापित हुए.इसी क्रम में बांका नगर पालिका मई 2018ई को नगर परिषद के अस्तित्व में आया. इसके पूर्व 2002 में नगरपालिका के अंतर्गत 16 वार्ड आते थे. वर्ष 2007 के चुनाव के बाद वार्डों की संख्या बढ़कर 22 हो गई .पुनः 2018 से नगर परिषद की घोषणा के उपरांत बांका नगर परिषद के अंतर्गत 26 वार्ड हैं. नगर परिषद बनने के उपरांत नए अध्यक्ष के रूप में संतोष कुमार सिंह ने नवंबर 2020 को अपना पदभार ग्रहण किया. और वर्तमान समय में कार्यपालक पदाधिकारी के रूप में भवेश कुमार और सिटी मैनेजर के रूप में विनय कुमार यादव पदस्थापित हैं. बांका नगर परिषद का क्षेत्र परिसीमन बढ़ जाने के कारण आवश्यकताएं भी बढ़ चुकी है इसको लेकर नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी और चेयरमैन संतोष कुमार सिंह ने पिछले दिनों चर्चित बिहार को बताया कि नगर परिषद के अंतर्गत 26 वार्ड हैं सभी वार्डों में सभी विकासात्मक कार्य गतिमान है कुछ जगहों पर नाला निर्माण एवं जल निकासी का कार्य नहीं हुआ है जिस को नए सिरे से भी दलित गति से इस कार्य का निष्पादन कर लिया जाएगा. कार्यपालक पदाधिकारी भवेश कुमार ने बताया की रोशनी के लिए नगर परिषद के सभी वार्डों के सड़कोंमुख्य सड़कों के फोल पर भेपर लाइट लगाया जा रहा है , जिससे रोशनी की व्यवस्था शहर में दुरुस्त हो जाएगी.एएरछ कंपनी के द्वारा एग्रीमेंट है. जो पूरे बिहार के नगर पालिका, नगर पंचायत व नगर परिषद में रोशनी की व्यवस्था करेगी. उसी के तहत पूरे नगर परिषद बांका में पोल पर वेपर लगाने का काम में जारी है. नगर परिषद के अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर परिषद के सभी26 वार्डो में कचरा संग्रहण हेतू बैटरी युक्त टेम्पू टोटो के द्वारा गीला और सूखा कचरा संग्रहित किया जा रहा है.उन्होने आगे बताया कि किसी किसी वार्ड में ड्रेनेज सिस्टम को दुरुस्त करने के लिए बड़ी पक्की नाला का निर्माण होना है. जिसके तहत योजना बन रही है. और विस्तृत कार्य योजना के तहत उसका भी समाधान जल्द हो जाएगा. नगर परिषद के कि किसी वार्ड में जलजमाव नहीं होगा .इसके लिए नगर परिषद हमेशे प्रयासरत है. उन्होंने आगे बताया कि टेलीसिस्टम के लिए डीपीआर बनाकर राज्य को भेज दिया गया है 60 करोड़ की लागत से यह सिस्टम जल्द ही सुप्रीत होने की उम्मीद है उन्होंने कहा कि तारकेश्वर प्रसाद उपमुख्यमंत्री एवं विभागीय मंत्री को स्वयं अपने हाथों से इसके लिए मांग पत्र समर्पित किया है. जिला पदाधिकारी के द्वारा भी आश्वासन मिला है. यह नगर परिषद में यह सिस्टम जल्द कार्य रूप में आ जाएगा.

जिला पदाधिकारी महोदय के सहयोग से बांका नगर परिषद में लगभग 60 करोड़ की लागत से ड्रेनेज सिस्टम का निर्माण होगा .इसके लिए डी पी आर बनाकर माननीय मंत्री तारकेश्वर प्रसाद को भेजा जा चुका है .उम्मीद है कि जल्द ही स्वीकृति मिलने के साथ हीबांका में ड्रेनेज सिस्टम दुरुस्त हो जाएगा.

संतोष कुमार सिंह

अध्यक्ष

नगर परिषद -बांका

बांका नगर परिषद में रोशनी की व्यवस्था दुरुस्त हो इसके लिए विभाग लगातार प्रयासरत है. नगर विकास आवास विभाग के द्वारा पूरे बिहार में नगर पालिकाओं का एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेडएएरछ के द्वारा 2018 में ही एग्रीमेंट हुआ था. जिसे 2 वर्ष में पूरा कर देना चाहिए था, परंतु किसी व्यवधान के कारण यह पूरा नहीं हुआ . जबसे मेरा योगदान बांका नगर परिषद में हुआ है, तब से मैं बेहतर लाइट की व्यवस्था के लिए प्रयासरत हूं. कंपनी अभी आई है. और हर पोल पर एल ई डी लाइट लगा रही है. उम्मीद है कि जल्द ही शहर रोशनी से चकमक हो जाएगा.

भवेश कुमार

कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद- बांका

उन्नत तकनीक से कृषि कार्य कर रहे जिले के किसान हो रहे समृद्ध

गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया जिले का प्रशिक्षण हब

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

बांका जिला कृषि के मामले में आत्म निर्भर होने के साथ-साथ उन्नत कृषि कार्य मेंभी दक्षता प्राप्त कर रहा है. जिले के किसान उन्नत तकनीक पद्धति से कृषि कार्य कर रहे हैं ,जिससे वे समृद्ध भी हो रहे हैं. जिले में कृषकों को आत्म निर्भर बनाने हेतु सरकार की कई योजनाएं गतिमान हैं. इसके तहत विभिन्न तरह के उन्नत कृषि कार्य करने हेतु प्रशिक्षण की भी व्यवस्था सरकार के द्वारा किसानों के लिए की जा रही है. जिससे किसान आप निर्भर होने के साथ साथ उन्नत कृषि कार्य में भी दक्षता प्राप्त कर रहे हैं. कटोरिया बाजार में बेलौनी रोड स्थित गुप्ता फार्म हाउस इसके सटीक उदाहरण है. जहां डेयरी मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, वर्मी कंपोस्ट, मशरूम उत्पादन, जैविक खाद्य, मधुमक्खी पालन के साथ-साथ मधु उत्पादन कर किसानों के हित के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है .साथ ही साथ फलदार वृक्ष में आम, अमरूद, केला, नींबू ,नारियल जामुन ,लीची, इत्यादि फलदार वृक्ष उपलब्ध है. किसानों को नई तकनीक के माध्यम से खेती के नए-नए गुण अपनाने हेतु गुप्ता फार्म हाउस में कृषि विज्ञान केंद्र बांका आत्मा के द्वारा भी समय-समय पर किसान गोष्ठी का भी आयोजन किया जाता है. जिससे क्षेत्र के किसान समृद्धि हों और नए तकनीक से कृषि कार्य कर आप निर्भर बन सके.

चेक डैम सह पुलिया के निर्माण से लोग हो रहे लाभान्वित

कटोरिया पंचायत अंतर्गत बेलौनी जोर पर बनी पुलिया सह चेक डैम से जल संचय एवं जल की उपलब्धता से क्षेत्र के किसानों के लिए धान और गेहूं सहित अन्य फसलों के उपजाने में पानी की पर्याप्ता होने से क्षेत्र के किसान लाभान्वित हो रहे हैं. पिछले दिनों पटना मुख्यालय से 4 सदस्य टीम के द्वारा उक्त स्थल का निरीक्षण भी किया गया था . निवर्तमान मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता ने इस संबंध में बताया कि इस चेक डैम सह पुलिया के निर्माण से बरसात के दिनों में इस क्षेत्र के लोगों को कटोरिया बाजार आने में काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था. खासकर बीमार एवं गर्भवती महिलाओं के लिए यह काफी कष्टप्रद होता था .मैंने अपने मुखिया अवधि में इस पुलिया का पुलिया सह चेक डैम का निर्माण कराया. जिससे जल संचय होने से इस क्षेत्र के किसान काफी लाभान्वित हो रहे हैं. वहीं पुलिया के निर्माण से क्षेत्र के लोगों का आवागमन भी सुलभ हो गया है.

गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया में मधुमक्खी, पालन मुर्गी ,पालन बकरी पालन, वर्मी कंपोस्ट ,मशरूम उत्पादन, जैविक खाद के साथ-साथ मधु उत्पादन कर किसानों के हित के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है. साथ ही साथ आत्मा एवं कृषि विज्ञान केंद्र बांका द्वारा किसान गोष्ठी का भी आयोजन समय-समय पर किया जाता है.

प्रदीप कुमार गुप्ता

वर्तमान मुखिया
ग्राम पंचायत कटोरिया
जिला -बांका

जन सेवा कर समाज को विकसित बनाना मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

21 फरवरी 1991 को बांका जिले के अस्तित्व में आया था तब से अब तक बांका जिले में अनेक बदलाव हुए 11 प्रखंडों से सुसज्जित बांका जिला आज है कई आयामों से जुड़ गया है जिसकी ख्याति बिहार में नहीं बल्कि देश स्तर पर होने लगी है मंदार में रोपवे का निर्माण बिहार का दूसरा रोपवे होगा.

इस प्रकार कई ऐसे विकासात्मक कार्य बांका जिले में हुए हैं .जिससे एक विकसित जिले की श्रेणी में बांका जिला आने लगा है .बावजूद इसके कटोरिया प्रखंड का क्षेत्र, जो जंगलों से घिरा है .अधिकांश स्थलों पर लाल मिट्टी पाई जाती है .पथरीली स्थल होने के कारण जंगली पौधे अनायास ही उग आने से किसी किसी क्षेत्र में विस्तृत जंगल का रुप हो गया है .इस क्षेत्र मेंमें अधिकांशतः महुआ, शीशम सागवान, एवं अन्य तरह के उपयोगी वृक्ष पाए जाते हैं. जिसे वन विभाग के द्वारा सुरक्षित और संरक्षित भी करने की विस्तृत योजना कारगर

सिद्ध हो रही है .परंतु कटोरिया प्रखंड का कठौन पंचायत जो वर्तमान समय में नगर पंचायत में के अंतर्गत हो जाने से कुछ पंचायतों को प्रस्तावित मानकर स्वीकृति मिलने के आसार हैं. इसी क्रम में पूर्व काकठौन पंचायत का महादेवपुर गांव जहां नाई,अनुसूचित जाति अनुसूचित, जनजाति, समुदाय के 70 से 80 परिवार निवास करते हैं . जोकि दर्वे पट्टी मुख्य मार्ग से 1 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित यह गांव महादेवपुर , जहां सरकार की सारी योजनाएं विफल साबित हो गई है. इस गांव में जाने हेतु ना तो पक्की सड़क है. ना पुलिया भी है. और ना ही आवास योजना के तहत लोगों को पक्की मकान का सपना पूरा हो सका है .आखिरकार लाचार जनता करे तो क्या करें. जनप्रतिनिधियों का भी सहयोग इस गांव को नही मिलने से स्थानीय लोग सरकारी योजनाओं के लाभ से लाभ से वंचित रह जाते हैं .इसी गांव के उचेश्वर ठाकुर ने जन सेवक बनकर समाज के उत्थान का संकल्प लिया है .बतौर समाजसेवी ठाकुरजी जन सेवक के रूप में पूर्व में समस्त प्रखंड व जिला के लिए अपनी भागीदारी निभा रहे हैं. अपितु भावी मुखिया प्रत्याशी के रूप में अपनी पत्नी अनिता देवी के साथ है मिलकरअपने पंचायत का समुचित विकास करने का संकल्प लिया है . देखना यह होगा होगा कि प्रस्तावित नए डोमसरनी पंचायत में विकास की गति को तेज करने हेतु सामाजिक दृष्टिकोण अनिता देवी के साथ कितना सहयोगी के रुप में उभर कर आएगा यह आने बाला भारत ही बताएगा.

अपने आवाज मिला दो मेरे आवाज से...

मेरे दिल की थी जो गुजारिश...
तुमने ठुकरा दी बड़े प्यार से...
अब मान भी जाओ...
आके अपने आवाज मिला दो ...
मेरे आवाज से...
सात जन्मो का रिश्ता कैसे टूट जाये...
दो पल के ठराव से...
हर जन्म की कसमें निभा के सजन

रखूँ मैं तेरे सपनो को बड़े नाज से..
अब गीत में लिखूँ मैं कैसे पूरा..
जब शब्द ना आये
तेरे दिल की अल्फाज से..
अब मान भी जाओ..
आके आवाज मिलो दो मेरे आवाज से..

सुमित कुमार
कटोरिया बांका

बांका जिले मेंभारत विकास परिषद की नई शाखा का हुआ शुभारंभ

दिव्यांग मुक्त जिला बनाने हेतु एक नई पहल

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका शहर केस्थानीय डोकानिया अतिथिशाला में पिछले दिनों भारत विकास परिषद की नई शाखा का शुभारंभ हुआ .कार्यक्रम में परिषद के सभापति रतन संथालिया विशिष्ट अतिथि के रूप में गिरीश चंद्र पाठक व मार्गदर्शक क्षेत्रीय मंत्री के रूप में निर्मल जैन मुख्य रूप से उपस्थित थे. प्रांतीय पदाधिकारी में से डॉ अशोक कुमार सिंह महामंत्री दक्षिण बिहार प्रांत त्रिलोचन सरदार भागलपुर संगठन के सचिव पंकज टंडन उपस्थित थे .कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर व वंदे मातरम के गान के साथ किया गया .कार्यक्रम के संरक्षक के रूप में देवाशीष पांडे व राहुल दुकानिया की मौजूदगी में राजाराम डोकानियां को अध्यक्ष एवं रोशन पासवान को सचिव व कोषाध्यक्ष के रूप में नितेश राजगढ़िया को बनाया गया. सभी सदस्यों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया. बनारस से आए विशिष्ट अतिथि ने भगवान शिव और भगवान गणेश की स्तुति कर वातावरण को भक्तिमय कर दिया. प्रांतीय महामंत्री ने भारत विकास परिषद के कार्योंके प्रति लोगों को जागरूक किया ,साथ ही संगठन के विषय में विस्तृत जानकारी दी .भारत विकास परिषद का उद्देश्य जिले को दिव्यांग मुक्त बनाने में हर संभव प्रयासरत रहना है. इस कार्यक्रम में देवाशीष पांडे, गुलशन कुमार ,निर्मल कुमार, शिव कुमार साह ,जयप्रकाश मंडल, रवि नितेश राज, सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे .नवनियुक्त अध्यक्ष राजाराम डोकानियां ने अपने संगठन के विस्तार जल्द होने की बात कही.

आजादी के 75 वीं वर्षगांठ पर जिले में शान से लहराया तिरंगा

उन्नत भाल हिमालय सुरसरि
गंगा जिसकी आन
उन्मुक्त तिरंगा शांति दूत बन देता है संज्ञान,
चक्र सुदर्शन सा लहराए करता है गुणगान
चहु दिशा पहुंचेगी ,मेरे भारत की पहचान
हे तिरंगा तुम्हें प्रणाम हे तिरंगा तुम्हें प्रणाम.

आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर पूरे देश में तिरंगा लहराया जा रहा था .वही राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत बांका जिले में भी आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर तिरंगा शान से लहराया गया .जिलाधिकारी सुहर्ष भगत के द्वारा स्थानीय आर एम के हाई स्कूल के मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया .साथ ही साथ समाहरणालय ग्राउंड में भी ध्वजारोहण किया गया .अपने संबोधन में जिले की उपलब्धियों के विषय में जिलाधिकारी ने विस्तृत जानकारी देने के साथ-साथ स्वतंत्रता की75 वीं वर्षगांठ पर जिले वासियों को शुभकामनाएं दी. इसके साथ ही जिला अधिकारी की उपस्थिति में विजय नगर महादलित टोला वार्ड नंबर 24 में सेवानिवृत्त शिक्षक बनारसी दास के द्वारा ध्वजारोहण किया गया. आरक्षी केंद्र बांका में पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार गुप्ता के द्वारा ध्वजारोहण

किया गया .वही अनुमंडल कार्यालय बांका में अनुमंडल अधिकारी मनोज कुमार चौधरी के द्वारा ध्वजारोहण किया गया. अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कार्यालय परिसर में एस डी पी ओ दिनेश चंद्र श्रीवास्तव के द्वारा झंडोत्तोलन किया गया. वही नगर थाना में थाना अध्यक्ष शंभू यादव के द्वारा झंडोत्तोलन किया गया. सिविल सर्जन कार्यालय में सिविल सर्जन सुधीर कुमार महतो के द्वारा झंडोत्तोलन किया गया. वहीं सीएमओ कार्यालय में एसीएमओ अभय प्रकाश चौधरी के द्वारा झंडोत्तोलन किया गया. साथ ही साथ नगर परिषद के अध्यक्ष के द्वारा नगर परिषद कार्यालय में झंडोत्तोलन किया गया. इससे पहले नगर परिषद अध्यक्ष के द्वारा एवं वार्ड पार्षदों के द्वारा बांका शहर में अवस्थित विभिन्न महापुरुषों के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया साथ ही साथ जिले के विभिन्न कार्यालयों में संबंधित अधिकारियों के द्वारा झंडोत्तोलन किया गया .पूरे जिले में प्रखंड स्तर पर विभिन्न पार्टी संगठन के द्वारा भी झंडोत्तोलन कर आजादी की 75 वीं वर्षगांठ को धूमधाम से मनाया. राष्ट्र के गौरव का प्रतीक राष्ट्रीय गान के मधुरध्वनि से संपूर्ण वातावरण राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत हो गया.

सदर अस्पताल को मॉडल अस्पताल बनाने हेतु स्वास्थ्य मंत्री को सौंपा मांग पत्र

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख योद्धा एवं समाजसेवी राहुल डोकानियां ने सदर अस्पताल बांका को मॉडल अस्पताल बनाने को बिहार सरकार से गुहार लगाई है. पिछले दिनों पटना पहुंचकर स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे से मुलाकात कर उन्हें मांग पत्र सौंपा जिसमें बताया कि 2016 में राज्य स्वास्थ्य समिति से बिहार के9 जिलौ में जिला अस्पताल को मॉडल अस्पताल में उत्क्रमित करने का निर्देश प्राप्त हुआ था. उसके बाद 9 जिले में प्रस्ताव राज्य को प्रेषित किया गया था. जिसमें सदर अस्पताल बांका भी शामिल है. बांका की आबादी

सदर अस्पताल की वर्तमान स्थिति एवं 11 ब्लॉक के साथ मरीजों को भी विस्तृत रूप से संभालना संभव नहीं है. इसलिए उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री से जल्द से जल्द जिला अस्पताल को विकसित कर मॉडल अस्पताल बनाने की मांग की है .साथ ही साथ बांका जिला विकसित रूप में सामने प्रदर्शित हो रहा है. जहां पिछले दिनों ऑक्सीजन प्लांट का भी माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा ऑक्सीजन प्लांट का भी शुभारंभ हुआ इस कारण जनता की उम्मीद और जगी है. साथ ही साथ मंत्री को बांका के डायवर्सन के बारे में भी वर्तमान स्थिति से अवगत कराया .

अधिक होने से स्वास्थ्य की समुचित व्यवस्था ना होने से मरीजों को बांका से 45 किलोमीटर दूर भागलपुर मायागंज अस्पताल जाना पड़ता है .सदर अस्पताल की वर्तमान स्थिति एवं 11 ब्लॉक के साथ मरीजों को भी विस्तृत रूप से संभालना संभव नहीं है. इसलिए उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री से जल्द से जल्द जिला अस्पताल को विकसित कर मॉडल अस्पताल बनाने की मांग की है .साथ ही साथ बांका जिला विकसित रूप में सामने प्रदर्शित हो रहा है. जहां पिछले दिनों ऑक्सीजन प्लांट

का भी माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा ऑक्सीजन प्लांट का भी शुभारंभ हुआ इस कारण जनता की उम्मीद और जगी है. साथ ही साथ मंत्री को बांका के डायवर्सन के बारे में भी वर्तमान स्थिति से अवगत कराया .साथ ही आग्रह किया की आवागमन बहाल करने हेतु चंदन नदी में अभिलंब पीपा पुल का निर्माण होने से आवागमन में आम लोगों को सहूलियत होगी. इसके साथ ही मंदार क्षेत्र में मोर अभ्यारण केंद्र बनाने हेतु वन एवं पर्यावरण मंत्री को भी उन्होंने मांग पत्र सौंपा. विकसित जिले की मंशा से जिले वासी के हित के लिए समाजसेवी राहुल दुकानिया ने अपनी महति भूमिका निभाते हुए ,यह संकल्प लिया है. कि स्वच्छ बांका, निर्मल बांका, के साथ-साथ स्वास्थ्य बांका भी बन सके. इसके साथ ही ग्रामीण कार्य मंत्री जयंत राज से मुलाकात कर बशीपुर नाहर पर पुल बनाने की भी मांग की, जिससे कि इस क्षेत्र के कई गांव के लोग लाभान्वित होंगे .ज्ञातव्य हो कि बशीपुर बांका प्रखंड के अंतर्गत आता है.

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

रवीश कुमार

परामर्शी समिति अध्यक्ष सह प्रमुख
प्रखंड- चांदन जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अजय कुमार

निवर्तमान मुखिया सह परामर्शी समिति अध्यक्ष
ग्राम पंचायत दक्षिणी कोझी ,गोड़ा
प्रखंड फुल्लीडुमर जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. सरयू प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा वन समिति
जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

भवानी देवी

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-6
नगर परिषद
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल एकेडमी, खेसर, बांका,
मो.:8002850364

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अनिरुद्ध प्रसाद सिंह

संस्थापक -मुक्ति निकेतन संस्थान
कटोरिया, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S. (Darbhanga) R.M.P.H. (Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुधारी
बांका, मो. 9955601568

आई.सी.डी.एस

बांका की ओर से समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

जय- विजय

15 अगस्त 1947 की स्मृति में
अन्याय का ही विजय होता ,
जब कभी भी न्याय परे
प्रकट होते स्वयं प्रभु ही,
धर्म रक्षक बेषधरे
पराधीनता हार मनुज का,
स्वत्व छोड़ चुप रहता है।
वाणी मूक भुजाओं में बंधन
की मर्जी से जीता है।।
सहनशीलता , क्षमा दया की
सीमा जब होती है पार।
जन -जन के जीवन में जगता
स्वतंत्रता का अधिकार।।
स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा तब
समर भूमि में कूद पड़े।
आजादी के दीवाने थे वे
योद्धा बनकर खूब लड़े।।
सन अट्ठारह सौ सत्तावन
से शुरू हुआ यह महासभा समर।
नव्वे वर्ष के बाद खतम कर
दिया गया यह घोर गदर।।
सन उन्नीससौ सैंतालीस का
माह अगस्त तिथि पंद्रह।
अंग्रेजों ने छोड़ दिया तब
भारत शांत हुआ सब विग्रह।।
मिला स्वराज भारतवासी को
जन-जन में सुख शांति भरा।
सदियों से मुरझाया जीवन
आज हो गया पूर्ण हरा।।
हल्का हम सब मिलकर के हर
साल मनाते पुण्य दिवस।
पूरा हुआ इस आजादी को
पचहतरवां आज बरस।।
जय हिंद

रचयिता-डॉक्टर
मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तम कुमार निराला

बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

कुलदीप पासवान

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-25
नगर परिषद बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ बलराम मंडल

D.E.H(Redg no 23631
रजि नं-23631
ग्राम - दुधारी
जिला- बांका
9939992228

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

बेबी कुमारी घोष

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-11
नगर परिषद
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

मो. शहीम

वार्ड पार्षद
वार्ड नं- 3
नगर परिषद
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

निशा रानी

वार्ड पार्षद
वार्ड नंबर -24
नगर परिषद
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

रंजित कु. शर्मा

प्रो.शक्ति ग्लास हाउस
न्यू मार्केट कचहरी रोड, बांका,
8084789834

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रीति बाला देवी

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-23
नगर परिषद
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

बालेश्वर ठाकुर

कंस्ट्रक्शन अध्यक्ष
लेबर यूनियर, प्रखंड
बाराहाट, जिला : बांका
मो. : 9709954686

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

बांका व्हील्स, बांका

SAHARA EVOLS

अब बांका में खुला सहारा इलेक्ट्रिक बाईक का शानदार शो रूम
अब बांका शहर बनेगा प्रदूषणमुक्त
बांका विल्स में इलेक्ट्रिक स्कूटी, बाइक और इलेक्ट्रिक रिक्शा के कई रेंज के मॉडल उपलब्ध है।
अब नो पेट्रोल, नो डीजल, नो प्रदूषण

मुकेश कुमार

प्रोपराईटर
एमडी प्लजा मार्केट, कटोरिया रोड, बांका
मो. 9631375224

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. प्रभा रानी

महिला चिकित्सा पदाधिकारी, सदर अस्पताल, गोड्डा (झारखंड)

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

चिरंजीव कुमार

निदेशक चाईल्ड लाईन

बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अमित कुमार

प्रो. शिव ऑटोमोबाइल

बांका रोड, कटोरिया

जिला : बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

इन्दिरा गार्डेन

श्री कृष्णापुरी, कटोरिया

AC एवं Non AC Room

पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। PARKING

यात्रियों को ठहरने का उत्तम व्यवस्था

शादी-विवाह बर्थडे, पार्टी एवं अन्य उत्सवों के लिए सम्पर्क करें

Mob.:9709362919

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस,
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

संतोष कु. सिंह

अध्यक्ष
नगर परिषद, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी
एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

निवेदक

विनीता प्रसाद

उपाध्यक्ष
नगर परिषद, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस,
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

जितेंद्र कु. राय

वार्ड पार्षद, वार्ड नं-26
नगर परिषद, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस,
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

पुतुल कुमारी

पूर्व सांसद
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस,
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिज्ञा कुमारी

प्रोपराईटर

इंडियन गैस एजेंसी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस,
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

उच्चेश्वर ठाकुर
समाजसेवी

अनिता देवी
भावी मुखिया प्रत्याशी

ठाकुर जी कैटरिंग

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

वैद्यनाथ सिंह

जिला निबंधन पदाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

भवेश कुमार

कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

संजय प्रसाद

जिला खनन निरीक्षक बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अरुण कुमार

M.V.I बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रमोद कुमार

जिला सांख्यिकी पदाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

विमल कुमार घोष

सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ लक्ष्मण पंडित

एम.बी.बी.एस. एम.एस. सर्जरी सदर, अस्पताल, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

विष्णुदेव कु. रंजन

जिला कृषि पदाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ संजय कुमार

प्रखंड विकास पदाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अमित कु. रंजन

अंचलाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

संजय कुमार

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी बी.आर.डी.एस बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अजय कुमार

सहायक अभियंता डीआरडीए बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संजय कु. ठाकुर

कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा कटोरिया जिला -बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

सूर्य भूषण कुमार

निरीक्षक, माप तौल बिभाग, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

विनय पाल

सेवानिवृत्त विशेष शाखा पदाधिकारी, बांका